सुखल मन तरसल आँखि

सुखल मन तरसल आँखि

मुन्नी कामत

श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

Ist edition 2014 of Munni Kamat's Sukhal Man Tarsal Aankhi:-Poems,-Seed Stories, Plays in single binding- published by Shruti Publication, 8/21, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi - 110008

ISBN:
Price: Rs. 200/- (INR)-

श्रुति प्रकाशन
रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Designed by: Prity Thakur

Printed & Typeset at: Ajay Arts, Delhi-110002

Sole Distributor :
Pallavi Distributors, Supaul,Ph.+918539043668

अनुक्रम

कविता खण्ड

समरपित होइत बेटी-

जहिया अकर जनम भेल
तहिए डिबिया मिझा गेल,
सब कहलक कलंक एलौ
छठिहारो सँ गीत हरा गेल।
ज्यों-ज्यों ई नमहर भेल
समाजक बोझ सँ दबैत गेल
गामक लाज, बाबुक पगड़ी
पकड़ि बेटी सियान भेल।
एक जनम बितल,
दोसर जनम लऽ तैयार भऽ गेल
केकरो नै किछु कहलक
हरिदम समरपित होइत गेल
जुबान रहितो बेजुबान बनि
सभ दुख सहैत गेल।
बेटभ् बनि गेल
समर्पण आ तियागक मुर्ति
तैयो एगो कलंक
अकरा माथ पर
किए लगि गेल
किए कहैए यऽ हमर समाज की
बेटी जनमिते दू हाथ धरती
तर चैल गेल।

सुखल मन तरसल आँखि-

एगो सहारा छल
गरीबकेँ,
अखरा रोटीपर
मेल पिऔजक!
ऊहो सुआद छिनाएल जाइए
खेतसँ पिऔज
हराएल जाइए।
सभ अंगोरा
गरीबेपर ढराएल
सुखल रोटी
तेल लऽ लेल
तइपर सँ
पिऔज गुल खेलाएल।
बान्हए परतै जुन्ना
आब पेटमे,
केकरो किछु कहैसँ तँ
नीक छै यएह कि
बज्जर खसाबी अपने मुँहमे।

मनुखक सौदा-

लाख-दू-लाख

पॉँच-पॉँच लाख
पर बात होइ छै,
तिमन-तरकारी जकाँ
मनुखोक आब सौदा होइ छै।
मास्टरकेँ दू-लाख
इंजीनियरकेँ पॉँच लाख
डाक्टरकेँ दस लाख भाव छै,
जेहेन सौदा लेबहक हो बाबू
तेहेन माल दइक रिवाज छै।
लक्ष्मी लऽ लक्ष्मी जाइ छै,
गरीबक घर बज्जर खसै छै,
कन्यादान बिखाएल जाइ छै,
पहिले तँ खाली बेटीए छल,
आब बापोक लहास
पोखरि-इनारमे ढेरीआएल जाइ छै।
दानक नाओं पर प्राण मंगै छै
हमर समाज निःसंकोच ई पाप करै छै,
कहिया एकर बुधि खुलतै,
अनहार घरसँ इजोतमे एतै,
जल्दी मुझाउ ई दहेजक आगि
नै तँ जरए परत सभकेँ
अइमे आइ-ने-काल्हि।

बाल-कविता।

अनमोल-बोल

जलसँ शीतल मुस्कान
मिसरीसँ मीठ बोल!
सभ कष्ट दूर होइ
जे करैए एकर मोल।
कम बाजी
उचित बाजी
नै बाजी कोनो
अनरगल बोल!
जीवनमे आनि नीक आचरन
जे अछि अनमोल।
करूआ वाणि
कटुता बढ़ाबैए
अपनेकँ अपनासँ
दूर भगबैए!
नै कही केकरो तितगर बोल
जे नाश करैए जिनगी
ओइ पिटाराकँ नै कहियो खोल।

चलाकक दुनियाँ-

आउ सुनाबी एगो बात पुरानी
जंगलमे छल एगो लोमड़ी सियानी
चलाकी आ बुद्विमानीकँ ओ खान छल

सुखल मन तरसल आँखि

सभकेँ चकमा देनाय ओकर काम छल।
एकबेर खाइ छल रोटी बौआ
झपैट कऽ भागल रोटी कौआ
जइकेँ बैठल लोमड़ी आगाँ
देखि कऽ रोटी
लोमड़ी ललचाएल!
भरि-भरि मुँह ओकरा पानि आएल
पबैले रोटीकेँ
चलाबी कोन तीर ऐ बुधुपर।
कहलक जेतेक सुहनगर
रंग तोहर कौआ
ओहोसँ मीठ तोहर बोल रे,
कान हमर तरैस रहल यऽ
सुना तूँ कोनो राग अनमोल रे।
मुर्ख कौआ फुइल गेल
अपन प्रशंसा सुनि सभ भूलि गेल।
जखने कहलक काँव-काँव
रोटी कहलक हम जाँव-जाँव
हमर भूखल पेटकेँ तृप्त करॉव-करॉव।

बुन-बुन बँचाबी हम-

एलै गुमार
चढ़लै खुमार
जरलै धरती
फटलै दराड़ि।

बुन-बुन लऽ
फेर सभ तरसतै
हेतै सभकेँ सभ बिमार।
सुन रमुआ, चल डोमरा
करी हम एगो काज
अखनेसँ हम बरखा
पानि जमा कऽ
बुझाबी हम धरतीक पिसास।
तब नै ई दराड़ि फटतै
नै कोनो अपदा घटतै
आइएसँ हम अपन
कएल बनाएब,
अपन देशकेँ
सुखारसँ बँचाएब।

१

जिंदगीक मरीचिका

लटैक रहल छल

गुच्छा गाछमे

रसभरल मीठ आमक

शरारती मन

ललचाइत जी

कहलक तोड़ि खाइ अकरा

मुदा कि करी

भय छल पहरेदारेक।

मन नै मानलक

पाइन मुँहमे भरि गेल

फेर सोचलूँ

बस एगो तोरू

तक डर केहन

यएह तँ निअम अछि संसारक।

सभ खाइत अछि

छुपि कऽ

कखनो घरमे

तँ कखनो बाहरमे

ऊँच,नीच सँ बनै यऽ

अतऽ सभ अपन

यएह पथ पर तँ चलैत अछि

सभक सभ।

पर सच जे अनभिग अछि

सभसँ ई अछि

ई मीठ फल नै

जहर अछि कोनो

जे बदलि रहल अछि

हमर नियत आ

हमर संस्कार

जे दऽ कऽ अपन मिठासक लालच

झोंकि रहल अछि

धधकैत भट्ठीमे।

जिन्दगीक राहमे

ऐत नित्य कतेक मरीचिका

पर सिखब हम अकरेसँ

संघर्षक रोज नया सलीका ।

२

ताकैत जिनगी कूड़ा ढ़ेरमे।

देह सुखल

पेट हाड़ी

आँखि दुनू लाल छल।

टुकुर, टुकूर

ताकैत छल हमरा दिस ओ

ओकरा मुखमे

अनंत सवाल छल।

पटनाक रेलवे लाइन पर

ठार एगो मासुम बच्चा

फटल पुरान लटकौने

टाँगने छल एगो बोरा

अपन पीठ पर

देखि कऽ ओकरा एना लागल जेना

ताकि रहल अछि अपन जिन्दगी

गन्दगीक ढ़ेरमे।

पर नै जानि कतेक मासुम

कहिना पनपैत अछि अहि संसारमे।

नित ताकैत अछि अपन मंजिल,

अपन भविष्य

अहिना कूड़ाक ढ़ेरमे।

३

संकल्प

छोड़ि जाएत माझी पतवार

उफनैत जिन्दगीक राहमे

अछि हसरत हुनकर कि,

थामैय पतवार हुनके अंश अहि मजधारमे।

छी गर अहाँ कृति हुनकर

तँ राही बनू अहि राहक

उठाउ पतवार आ माझी बनू

जिन्दगीक अपन राहक।

ऐल छी अहां जतऽ तक

ओइसँ आगुक कल्पना करू

देख रहल अछि राह मंजिल अहाँक

मुस्कुराइत ओइ पारमे।

छोड़ि कऽ मोह वट वृक्षक

समना करू हवा आ पानिक

तब बनत व्यक्तित्व अहाँक

अहाँक नामसँ अहि संसारमे।

अहाँ अगर अंश छी हुनकर

तँ बुझाइ नै कहियो ई दीप

जे छोड़ि गेल अपन सब कुछ

बस एगो अहींक विश्वासमे।

४

ठमकल शब्द

रूकि जाइत

ई हवा

ई नजारा

ई बहार, दुनियाक

हम

भऽ जाएब विलीन कतैव

रूकि जाइत ई कलम

आर

हरा जाइत शब्द कतैव।

नै उठत

वेदना मनमे

नै उमड़त भावना कोनो।

जब जाएब

खामोश अतऽ सँ

तँ मेटौ जएत

सब हसरत दिलक

ने आएब हम

याद ककरो

ने करब हम याद किनको

ओइ अज्ञात सफरमे

नै मिलत हमराही कोनो

बरसैत मेघ, चिलमिलाइत धूप

सबहक बीचमे

रहब हम असगर ठार

ने लऽ जएब, ने छोड़ि जएब किछो

बस एगो दिया जे जरत

अहि ठाम सदखन, सबहक मनमे

हएत ओ हमर कृति,

हमर करमक ज्योत।

५

दहेजक बिहाड़ि।

कहिया तक रहबै हम

समान यौ भइया

कहिया मिटतै ई अभिशाप यौ

हमरो तँ परमतमे भेजलक

मुदा अबैत ऐ संसारमे सब हेय सँ देखलक

कोय कुलच्छनि तँ कोय कलंकनी कहलक।

भइयाकेँ दुलार केलक

हमरा धुतकाइर कऽ माय भगौलक

दिन-राइत हम मायक हाथ बटै छी

बाबू-दायक सेवा करै छी

तइयो किए ई फटकार सुनै छी

सुनि रहल छी सबहक मुँहसँ

दहेज बिनु नै हएत हमर व्याह

जे थामत हाथ हमर

बाबू भरत पहिले जेब ओकर।

हम बेटी छी आ कि समान

जे गाम-गाम सँ आउत लोग

करै लऽ हमर दाम छाम।

आब सजबऽ पड़त सभ बेटीकँ

अपन आत्मदाहक साज

आर कहिया तक पिसाइत रहतै

बेटीक समाज।

६

हरैल हमर रूप

जब एलौं तँ रूइ छेलौं

कोमलताक सागरमे डूबल छेलौं
प्यार सँ छुबै छल सभ हमरा
हम सपनामे सूतल छेलौं।
अंजान छेलौंव दुनियाक हकीकत सँ
ऐ शोर शराबा, ऐ धधकैत भट्ठीसँ
छिन गेल ओ स्वरूप
देलक दुनिया हमरा नया रूप।
देख कऽ दुनियाक रंग
कॉॅंइप रहल अछि हमर अंग
छल, कपट, धोखाधरी
सब अछि सबहक संग।
कतेक अरब रामक ऐमे पड़त
करै लेल अतऽ सँ पापक अंत
देखकऽ ई हम छी दंग
आइ सबहक मनमे बसल अछि
हजारो रावणक अंग।

७

विदाइ

जो गै बेटी,

आब कि निहारि रहल छी

नोराइल आँखिसँ ककरा ताकि रहल छी।

अतै तक लिखल छेलै साथ

अतै तक छेलियौ हम तोहर बाप।

एक जनम तूँ अतऽ गमेलऽ

हमरा संगे सभ सुख दुख हँसि कऽ बितेलऽ

अहिना तूँ ओतौ रहिअ

खुशीक दीप जराइयहँ

केलियौ आइ हम तोरा पराइ

मन रोबैत अछि

ठोर हंसैत अछि

कऽ रहल छी आइ तोहर विदाइ।

जड़ैत ज्योत

माय गे,

कतेक दिन तक हम बच्चा रहबै
बकरी संगे खेलैत रहबै
हमरो दुनियाकेँ
जानैक एगो मौका दऽ दे
माय हमरा बस्ता दिया दे।
छै छोट हमरासँ
मालिकक बेटा
अंगरेजियेमे फटर-फटर करै छै
हम नै बुझै छी
देवनागरीयोक एगो अक्षर
माय गे,
हमरो स्कूल जाए दे।
मालिकसँ जा कऽ तूँ कहि दही
नै चरेबइ आब हम
भैंस हुनकर
नै खेबै तरकारी, रोटी
हमरा नूने रोटी खा दे

मुदा माय गे,

हमरा तूँ पढ़ै लेल जाय दे।

पढ़ि लिख हम

अफसर बनबै

तोरा लऽ लब साड़ी अनबै

बाबूक बुरहक सहारा बनि

हम दुनियामे नाम करबै

माय गे,

आब हमरा अपन भविष्य बनाबऽ दे

हमरा जिनगी सवारऽ दे।

बेटी

बेटी अभिशाप नै वरदान अछि।

तिलकक बिहारिसँ

बेटीकेँ नै बहाबू

ई छी घरक लक्ष्मी

अकरा नै समान बनाबू।

नै अछि ई बोझ

नै अभागी

शक्तिक ई प्रतिरूप अछि

अकरा नई शापित बनाबू।

दुर्गा, काली, लक्ष्मी, सरस्वती

संगे सीतो अइमे समाइल अछि

हिनकर आँचलमे हमर काल्हि अछि

अकरा नै कलंकित बनाबू।

२

दहेजक आइग।

सुनथुन यै सासुमा

हमहूँ छी किनको बेटी

हमहूँ किनको दुलार छी

हमहूँ ९ महिना किनको कोइखमे
आस आ ममता सँ सिंचल छी।
नै बुझियौ आन हमरा
हमहूँ एगो मायक अंश छी
लऽ कऽ आइल छेलौं
आश एगो कि,
माय कऽ छोड़ि, माय लग जाइ छी,
बाबू छोड़ि बाबू लग
यएह अरमान बसैनउ हम
सपना सजेने एलौं हम।
बाबू हमर अछि गरीब
बेटीक कन्यादान कऽ कए
तँ राजा जनको भऽ गेल छल फकीर
जब दिलक टुकड़े सोंइप देलकनि
तँ कि आगाँ चाह रखैत छी।
दहेजक खातिर कतनो बेर अहाँ हमरा जरैब
तइयो नै अहाँ अपन

एक बितक पेटक अग्निकँ बुझा पएब
छोड़ू ई लालच, मोह
अहूँ तँ ककरो बेटी छी।
आइक नै तँ काल्हिक चिंता करू
घरमे बेटी अछि अहूँक जवान
अपन नै तँ ओकर परवाह करू।

३

ओइ पार

तूँ बता रे माझी
कि छै ओइ पारमे
माय, बाप,भाइ, बहिन
अपन, पराया सभ नाता, रिश्ता
मिलतै ओइ संसारमे।
सुनै छिऐ राजा हुअए या रंक
छोड़ऽ पड़तै सभकँ ई देहक संग
तूँ बता रे माझी
बिन देहक वएह मलार

मिलतै ओइ संसारमे।

नै मंजिलक अछि खबर

नै रस्ताक पहचान

तूँ बता रे माझी

अन्हार राह पर चलैत हम

एकोगो राह बना पेबै

ओइ पारमे।

४

नेताजी

सफेद लिबासमे लिपटल नेताजी

हाथ जोड़ि, नतमस्तक नेताजी

जुबान खामोश, अबोध नेताजी

देखियौ आइल हमर गाम

हमर पालन हार, नेताजी।

माँगै लेल भीख

आश लगौने नेताजी

भिखक नाम पर

खून माँगैत अछि, नेताजी।

कतेक सालसँ हम सभ चुसाइत छी

आब बस पाइन अछि देहमे

यौ नेताजी।

बुझि रहल छी करतुत अहाँक

सफेद वस्त्रक भीतर

कारी मन अहाँक नेताजी।

कतनो खाइ छी तइयो

दैतक खुनल पेट नै भरैत अछि

अहाँक नेताजी।

ज्यों फेर पकड़ा देब बंदूक

हवलदार बनि

हमरे सभ पर दहारब अहाँ

यौ नेताजी।

५

पहिल बरखा

छू कऽ हमर मनकेँ

गुदगुदेलक ओ प्यारसँ

छुलक हवाक झोका हमरा

अपन शीतलताक मलारसँ।

छिटका रहल छल चाँद-चाँदनी

जे थपथपैलक हमरा गालकेँ

अपन ममतामय दुलारसँ।

झमौक कऽ ऐल कारी मेघ

नहलाकऽ गेल अइ जहाँ केँ

अपन होठक मिठास सँ।

छू कऽ हमर अंग-अंगकेँ

चुइम कऽ धरतीक कण-कणकेँ

पुचकारलक सहलैलक

अपन स्नेहक बरखा सँ।

६

किसान

होइत भिनसरे

अजबे नजारा सभ गामक

सुखल मन तरसल आँखि

कोइ पकड़ि बड़दक जुआ

कोइ खाय रोटी संग नुनमा

दौड़ल अपन काम पर।

सबे परानी माइट संगे

अपन जीवन बिताबैए

बच्चा तँ बच्चा

बड़को अहिना पोसाइए।

दिन-राइत मेहनत कइर ई

धरतीक कौइख सँ अन्न उपजाबैत अछि

नै कोनो थकान अकरा

नै ककरो सँ शिकाइत अछि।

एहन निर्मल अछि

हमर किसान जिनकर

प्रतिदान आ संतोषे

संस्कार आ पहचान अछि।

समाजक विडम्बना

देख कऽ ई समाजक विडम्बना
विआहब आब हम धिया कोना
चारपर खढ़ नहि पेटमे अन्न नहि
नै अछि संगमे एक्को अना
मांग भेल ड्राइवरकेँ लाख
मास्टर आ डाक्टरक नै पुछूँ बात
दिनक उजयारि भेल कारी, भेल घनघर राति
ई हमरेटा नहि
जन-जनक दुखरा अछि
बेटिबलाकेँ मलिछ
बेटाबलाकेँ खिलल मुखरा अछि
नन्हिटा धिया हमर भेल आब सयानी
तिलकक एहि युगमे बिआहव कोना बिटिया रानी
बहि रहल यऽ अरमान सभ, जेना मुट्ठीमे पानि

दर्दक टिस

पहाड़ जकाँ दु:ख
देलक पहाड़
एहेन एबकी आएल अखाड़
सगरे मचल हाहाकार।
केतए गेल सभ देव
केतए नुकाएल दुःख हरता
कुहरा कऽ जन-जनक
धियान मग्न भेल दाता महादेव।
माएक सुन भेल आंचर
केतौं हराएल नुनुक बोल
असगर छोड़ि बूढ़ बापकेँ
बिछुरि गेल बेटा अनमोल।
बाबा-बाबा करैत
गेल कतेक प्राण

किअए ने बचेलौं हे बाबा

अपन भक्तक अहाँ जान।

रोकू कोय ऐ सैलाबकेँ

और केतेक जानक बलि

देबै यो इनसान,

किया बनैले चाहै छी भगवान

देखियो अहींक करनीसँ

समसान बनल उत्तराखण्ड प्रान्त।

पहाड़क छाती चिर कऽ

ओकरा घाइल अहीं केलिऐ

नदीकँ हाथ-पएर काटि कऽ

सुखल मन तरसल आँखि

ओकरा अपाहिज सेहो बनेलीऐ
गाछ-बिरिछ काटि कऽ
छत हिन माए धरतीकेँ केलिऐ
शुरू केलिऐ अहाँ
विनासक लिला
सभ ताण्डव ठाढ़ अहीं केलिऐ।
आब प्रकृतिसँ खेलवारि
करैक सजा देखियो
नदीक हुहंकार सुनियो
बून्न-बून्न लऽ केतौ तरसैत धरती
तँ केतौ वएह बून्नमे डुमैत जान देखियो।
ऐ असंतुलिताक कारण अहाँ छी
किअए अहाँ बनैले चाहैए महान छी
आबो खोलू अपन कपाट
कहि पुरा दुनियाँ ने बनि जाए श्मशान-घाट।

नोराएल आँखि

उजरल घरमे पोखरिक पानि
पीब रहल अछि अखनो लोक
पूछि रहल अछि मासुम बच्चा
कहिया तक भोगबै हम ई सोग।

केना उजरल घर बसतै
केना एकर नोर सुखतै
और कतेक दिन
अहिना भोगतै ई भोग।

सबहक दाता वएह एगो माता
जिनकर अछि समान पूत
कोइ कहाबए हिन्दू-मुस्लिम
आ कोइ अछूत।

सुखल मन तरसल आँखि

37

भाइ-भाइकेँ जातिमे बाँटि

धुतकारैत देखैत छी समाजमे

की कहब हम ई विडम्बना

कतेक चोट लगैत अछि कोढ़मे।

किअए छी हम अछूत

वएह विधना हमरो बनौलक

वएह रँग-रूप-गुण देलक

पर अबिते ऐ संसारमे

परजाति कहि कऽ सभ धुतकारलक।

पहिले जाति बारि कऽ गाम बँटलक

मनक संग पाइनो बँटलक

नै ई कोइ सोचलक हमरा मनुख

देखि कऽ सभ मुँह फेरलक।

कहू पर हे बुधिजीवि

हमरेसँ सभ उद्धार होइए

हमर बनेलहा दौरा देवताक

सिरपर चढ़बैत अछि

वएह माटिपर हमहूँ ठाढ़ छी

तँ हम किअए अछूत कहाइ छी!!

भ्रष्टाचारक प्रसाद

एगो खेल खेलैत देखलौं

स्कूलमे

हरा गेल छल खिचरी

सभ प्लेटमे।

देख कऽ भेल अचम्भा

पुछलौं सर ई कोन अछि

जादू-टोना

सर कहलखिन

कि कहब हम केहन अछि

भ्रष्टाचारक मारि

अबैए तँ यऽ भरल प्लेट

मुदा मिलैत अछि यएह जादूक खेल।

एक मुट्ठी बरका बाबू

एक मुट्ठी छोटका बाबू

दू मुट्ठी अफसर साहेब

आ झपटैत अछि

तीन मुट्ठी कलर्क बाबू

देखते-देखते गाममे फकाइत अछि

मुट्ठी-मुट्ठी अहिना बटैत अछि।

जकरा देखू टक लगेने अछि

कहैत छथि हमरा दिअ

ई तँ सत्यनरायण भगवानक प्रसाद अछि।

तब हँसत तुलसी

सुखल मन तरसल आँखि

हम एक पुरूषक बेटी छी

एक पुरूषक बहिन

एक पुरूषक पत्नी

तँ एक पुरुषक माँ

हर पग-पग पर

हर संघर्षक बीच

हर सुख-दुखमे

हर रूपमे हम पुरूषक संगे ठार छी

हमरो मुँहमे वएह जुवान अछि

हमरो दृष्टि वएह देखैत अछि

हमरो दिमाग वएह सोचैत अछि

हमरो जिगर मे वएह साहस आ हौसला अछि

आइ पुरुषक संगे चलैमे हम समर्थ छी

तँ फेर किए आइयो

१००मे सँ ७५ महिला

घरेलू हिंसाक शिकार अछि

ई हमरा लेल नै

हे बद्धिजीवी अहाँ लेल शर्मक बात अछि।

आबो जागु हे मानुस

विकसित अपन विचार करू

नारीकेँ परितारित करनइाइ छोड़ू

नव युगक निर्माण करू।

जतऽ नै हएत नारीक इज्जत

ओइ समाजक केना विकास हएत

केना रहत हँसैत तुलसी

केना आंगन मुस्कुरैत

माँक पूजा पहिले करि

नतमस्तक भऽ मन झुकाए

देखयौ फेर काल्हि अपन

कतेक सुन्दर अछि हँसैत खेलाइत।

शिल्पकार

आइ हम देखै छी जइ दिस

वएह दिस ठार एगो शिल्पकार अछि

43

दौड़ रहल यऽ सभक सभ

अइ रेसमे लऽ कऽ अपन औजार

कहि रहल अछि देव हम संसारकेँ

नव रूप रंग आकार।

मुदा ककरो नै

टटोलैत देखै छी खुदकेँ

नै निखारैत अपन

प्रतिभा आ गुणकेँ।

ई संसार तँ परिपूर्ण अछि

सभ लोभ मोह आ भय सँ दूर अछि

फेर अकरा हम कि देव अकार

रूप रंग आ प्रकार।

बनाबै कऽ यऽ तँ बनाउ

अपन प्रतिमा अपन ओजार सँ

निखारू मानवता खुदमे

अपन उच्च विचारसँ।

याद गामक

गामक बर मन पड़ै यऽ

पिपरक गाछ

पुरबा बसात

पिअर सरसो मन पड़ै यऽ।

लटकल आम

मजरल जम

गमकैत महुआ मन पड़ै यऽ।

धारक खेल

कदबा खेत

रोटी-चटनी मन पड़ै यऽ।

बाधक झिल्ली

मुठिया धान

पुआरक बिछौन मन पड़ै यऽ।

घुरक आगि

पकैल अलुहा

सुखल मन तरसल आँखि

45

ओ गपशप मन पड़ै यऽ।

गामक बर मन पड़ै यऽ।

आसक किरण

अखार बितल

सौन बितल

बितल जाइ यऽ

भादबक बहार

सुइख गेल सभ

इनार-पोखैर

नै बरसल अबकि एको अछार।

बजर भेल

माँ धरती

कारी सभ

गाछ-पात

कोन पाप भेल

हमरा सब सँ
आबो तँ बताबऽ हौ सरकार।
नै खाइ लऽ अन्न
नै बुझबै लऽ तरास
अहिना तक बितेबएय
और कतेक मास
आब समटऽ
अपन भाभट
दए हमरा सभकँ
जिऐ कऽ आसार
हे भगवान तूँ
बरसाबऽ पानिक बोछार।

नारीक पहचान

देख कऽ चिड़ै-चुनमुन

सुखल मन तरसल आँखि

47

मन होइत छल कि

हमहुँ उड़ी अम्बरमे।

जा कऽ देखी

घरक अलावा

की अछि

अइ संसारमे।

भइया संगे हमहूँ

जाइतौं स्कूल

उलझल रहितौं किताबमे।

मुदा जब निहारलौं

अपन दिस

छल बानहल जंजीर

पएरमे।

माय कहलक

हमर मान आ बाबुक पगरी

छै दुनू तोरे हाथमे।

नैन टा

हमर उछलैत मन

मरि गेल विडम्बनाक अइ संसारमे।

सपना देखैसँ पहिले

जगा देलनि

सुनि मायक वचन

बहुत कचोट भेल मनमे।

हम बेटी छी

आकि अवला

जे चुप रहैक यएह इनाम मिलैत अछि

पुरूष सत्तातमक अइ समाजमे।

आजाद गजल

१

मनमे आस सफर लम्बा अनहार बहुत

पनपि रहल अछि मनमे सुविचार बहुत

नै डर अछि मिटै कऽ हमरा एको रती

सुखल मन तरसल आँखि

बढ़ैत ने रहए चाहे ई अत्याचार बहुत

सर उठा कऽ चलैत रहब हम सदिखन

दिलमे अछि घुरमि रहल धुरझार बहुत

बेदाग रहत चुनरी सीताक बुझल अछि से

देहमे अछि अखनो प्राण आ इनकार बहुत

चिड़ैत रहब अनहारक कलेजा छी ठनने

मुन्नीकेँ मिलत अइसँ आगू प्रकार बहुत

२

मुदत्ते बाद महफिलसँ मुँह झाम निकलल

बेकार छल निकलल जेना काम निकलल

हरा गेल भीड़मे आबि कऽ ताकी निङ्घारि

नतीजा जे छलै निकलबाक सरे-आम निकलल

छिन गेल सरताज हमर खाली माथ हँसोथी
बेबस बनि लाचार शर्मसार अवाम निकलल

फेर सत्तामे अबैक उम्मीद नै एक्को रती
घुरब नै फेर आइ ओ देने पैगाम निकलल

सच तँ ई अछि राजनीतिमे दाग लागल
मुन्नी अपने करमसँ कत्लेआम निकलल

१

बउआ देखहक चांदकेँ

बउआ देखहक चांदकेँ।
चंदा मामा दूर छै

सुखल मन तरसल आँखि

51

देखहक कतेक मजबूत छै

नित कटै-छटै छै

तइयो हंसैत छै

कतेक अटल निर्भय छै।

बउआ तुहो अहिना बनिहक

दुखसँ नै कहियो घबरैहक

गिरबहक तबे तँ

चलनाइ सिखबहक

लगतऽ चोट तँ

सम्भलनाइ सिखबहक

देखऽ अइ चांदकेँ

जे घटैत-घटैत मिट जाइ छै

पर एक बेर नै घबड़ाइ छै

धीरे-धीरे फेर आगा बढ़ि

परपूर्ण भऽ कऽ पुनः

आसमान मे खिलखिलइ छै।

२

भोरक सनेस

उठऽ हौ बउआ

उठू यइ बुच्चिया

देखियौ नजारा भिनसरक

भागल अनहरिया

भेल इजोत

करू स्वागत दादा सूरजक।

जतेक भिनसर

उठबहक बउआ

ओतेक नमहर हेतऽ दिन

कुल्ला-आछमन कैर

लए आशीष अपन नमहरक।

भिनसरे नहेने सँ

मन तरो-ताजा हएत

निरोग बनल रहब अहाँ

53

नै दरकार हएत कोनो डॉक्टरक।

खुब पढ़ि-लिख

बउआ-बुच्ची

आगू-आगू दौड़ैत चलू

अछि अहीं कंधा पर

भार अपन देसक।

बेटी-लहास

एक-एक दिन बितल

पुरल एक मास,

अन्हार घरमे

सूतल छेलौं हम

नअ मास।

देखैक बहुत

जिज्ञासा छल हमरा

ऐ घरक मालिककेँ

जे नअ मास तक

बिनु कहले मेटबैत

अएल हमर

सभ भूख पियास।

आइ भेटत रौशनी हमरा

देखब हम संसारक चेहरा,

लेब हम आइ नव जीवनक साँस

पुरा हएत हमर आइ सभ आस।

आँखि बंद अछि

किछो देख नै सकै छी हम

मुदा महसुस भऽ रहल-ए

एगो ब्रज हाथ, जे

दबौचि रहल अछि

हमर कंठकेँ

एगो अवाज जे बार-बार

हमरा कान तक पहुँचि रहल अछि

बेटी छिऐ माइर दहिन!

बस रूकि गेल हमर साँस

बनि गेलूँ हम लहास।

बाल-श्रम

कुड़ा-कड़कट बीछ कऽ

बाबू नै हम

कोनो पाप करै छी,

अहाँकेँ गन्दगी

पहिले साफ करि

फेर अपन पेटक जोगार करै छी।

बाल-श्रम अछि जुलुम

बड़का-बड़का पोस्टरमे पड़लौं

पर अफसर आ नेतेक घरमे

नित काज करैत एलैं

जब पेटक आगि धधकैत अछि

तब ने कोनो

कागज-कलम सोहाइत अछि।

चोरी-चपाटीसँ तँ नीक

मेहनति करि दूगो रोटी खाइ छी।

१

फगुआ

सब मिलि करैए हमजोली

कान्ह संग गोपिया

खेल रहल अछि होली।

निला पिला लाल हरा

अछि सभ रंग सुनेहरा

आइ बेरंग नै रहैए कोय

चाहे धोती होय या घाघड़ा।

दादी चाउरक पुआ बनेतै

माय दही आ खीर खियेतै

सुखल मन तरसल आँखि

57

बाबू देतै आशिष

रंगा-रंग होय सबहक जिनगी

जिबैए सभ लाख बरिस।

ई अवसर नित अबैत रहैए

ई मेल-मिलाप बनल रहैए

नै हइय केकरोसँ झगड़ा

सभकेँ मुबारक ई दिन प्यारा।

२

आनहर कानुन

देश-देशसँ

एलै अवाज

तैयो नै बदलल

हमर समाज।

नै होइए

एकरा दरद कोनो

नै देखैए ई

कोनो पाप

किएक तँ बानहल अछि

एकरा आँखिपर

कारी साँप।

जे डसि रहल अछि

हमर संस्कारकेँ

हमर अच्छाइकेँ

आ करा रहल अछि

हमरासँ नीत पाप।

१

बूँदक मोल

फाटल धरती

जरल घास

एक बूँद पानि बिनु

अछि सभक सभ उदास।

सुखल मन तरसल आँखि

59

नै बुझलौं हम

प्रकृतिक निअम

तँइ कानै पड़त आब

कतेक जनम।

आइ बुझितौं मोल

जे पाइनकेँ

तँ एना पियासल नै मरैतौं जाइन कऽ।

बहुत नाच नचेलौं

छन्नी-छन्नी धरतीकेँ केलौं

अपन सुविधा खातिर

धरतीकेँ सिमेंट बालु सँ झाँपि देलौं

वएह अपमानक बदला छी ई

लागए नै पएरमे माटि

तकर सजा छी ई

आब तँ लोरोमे नै

पानि अबैए

जकरा पीब हम पियास बुझाबी

बुझा रहल यऽ आइ

ओइ एक बूँदक मोल

छल हमराले ओ कतेक अनमोल।

२

करी मिथिलासँ पहचान

चलू मिथिला, सुनियौ मैथिली

कतेक मीठ ई बोल यौ

मिसरी घुलल अछि हर शब्दमे

करिरौ एकर मोल यौ।

सीताक नैहर एतए

उगनाक ई प्रिय स्थान यौ

ऋषि-मुनिक भूमि ई

अछि एतऽ विद्वानक खान यौ।

होइत भिनसर सुगा

सीता-राम पढ़ैत अछि

बउआ नुनु कहि सभ

बात बजैत अछि

करियौ अइ भूमिक पहचान यौ।

एतए कऽ माछ-पानक

दुनिया करैए बखान यौ

धोती-कुरता आ पाग

अछि पुरूषक पोषाक यौ।

अइ धरती पर हम जनमलौं

अछि ओइ जनमक

कोनो नीक काज यौ

फेर-फेर हम एतै जनमी

अछि अतनी प्रार्थना भगवान यौ।

३

कारिझुमरी कोसी

दू-चाइर दिन नै

आइ सात दिनसँ

ऊपर भेल

कोसी कारिझुमरी

सभ लेने चलि गेल।

नै खाइ लऽ

अन्न अछि

नै पिबै लेल पानि

ऊ डसिनिया

सभ ढेकारैत लऽ गेल।

बाउ हरैल अछि

भाइ ढिस भऽ पड़ल अछि

राइते-राइत आएल

एहन निरलज्जिया जे

कुहरा कऽ चलि गेल।

नै बचल एक कनमो किछो

नै भाइ-बाप नै रिश्तेदार कोइ

असगर ठार छी कछारिमे

ई कोसी कारिझुमरी

असहाय छोड़ि हमरा

हँसैत चलि गेल।

४

63

नै लेब आब हम दहेज

दहेजक खातिर

गिर गेलौं हम

मानवताक समाजमे।

कि कहब आब

अपन दुखरा

कि लिखल छल कपारमे।

धोती-कुरता पहिर कऽ बाबू

ठाठसँ चिबबैत पान अछि

हमरा बना कऽ पापी

आब ओ कात अछि।

पढ़ि-लिख हम

बानर बनलौं

बाबूक बातमे एलौं

दहेज लऽ कऽ

केहन काज केलौं

नै बुझलौं

नारीक शक्ति

नै ओकर सम्मान केलौं।

कि कहब आब हम कि

कतेक घिनौन कुकर्म केलौं।

५

मिथिलाक दादा

खेत बेच मन कारी झाम

मुदा खाइए माछ सुबह-शाम।

जमीनक मोल नै जानैए ई

पुरखा अरजलहा बेचैमे लागैए कि।

बैठल-बैठल ताल करैए

पटुआ धोती पहिर गाम घुरैए।

चुप रहि कऽ सभ नाच नचाबैए

हुक्का गुरगुड़बैत अपन काज सलटियाबैए।

फाटल जेब मुदा ऊँच शान

देखियौ मिथलाक एगो ईहो पहचान।

सुखल मन तरसल आँखि

तइयो खुआबैए ई बुढ़बा सभकेँ

नित पान आ मखान।

६

पाहुनक माछ

एलखिन पाहुन लऽ कऽ माछ

भदवरियामे नै अछि सुखल कोनो गाछ।

माँ हम करबै आब कोन काज

कोना रखबै मान कोना सजेबै साज।

सुनु कनिया हमर बात

छानि उजारू करू ई काज।

नै केना बना कऽ देबै

रामकेँ केना उपासल रखबै।

छानि उजरतै तँ फेर बनेबै

मुदा रूसल पाहुन केना मनेबै।

पजारू चुल्हा पड़लैए साँझ

लगाउ आसन परसू तिमन संगे तरल माछ।

७

हमरा पागल कहैत अछि लोग

लरखड़ाइत कदम थरथड़ाइत होठ

नसाबाज हम नै, अछि जालिम सभ लोक।

चोरी केलौं नै मुदा चोर कहेलौं

पर डकैती करि बाइज्जत घूमि रहल अछि लोग।

एक मुट्ठी अन्न लऽ तरसि रहल छी

देखियौ गोदामक-गोदाम अन्न सरा रहल अछि लोग।

हम मेहनतो करि नै अपन पेट भरि पाबै छी

पर हमर सरकार भरल पेट अरबोक घोटाला करैत अछि

आब सोचियौ सभ लोक।

८

सगरे अनहार अछि

भ्रष्ट आ भ्रष्टाचारसँ

भरल पूरा संसार अछि

कोइ नै बॉँचल अतऽ

सौंसे ओकरे राज अछि।

कोइ देखा कऽ लुटैए

कोइ चोरा कऽ लुटैए

तँ कोइ शरमा कऽ लुटैए

लुइटिक अतऽ बजार अछि।

के कहत ककरा अतऽ

सभ एक प्रकार अछि

गर्भमे सिखैए भ्रष्टाचार

यएह नव युगक संस्कार अछि।

कदम-कदम पर घूस दैत मानव

अइ दुनियामे अबैए

आगुओ घुसे दैत

घुसकैल जाइए

हर मोर पर देखबैत यएह नाच अछि

घुस दैबला सभसँ बड़का बइमान अछि।

९

मायक रूदन

सोचलौं बेटा

बेटी भेल

रोपलौं आम

बबुल उगि गेल।

छापि रहल अछि

समाजक अत्याचार

केना बचैब हम

१८ बरख अकर लाज।

ई हमर बोझ नै

हमर अंश छी

जकरा हम नैनामे बसैब

मुदा केना कऽ सियाही

भरल घरमे अपन चुनरी बचैब।

कलंक बेटी नै

ई समाज अछि

जे युग-युगसँ

उज्जर चुनरीमे लगबैत दाग अछि।

चारू दिस छल लक्ष्मण रेखा

69

तइयो हरण भेल सीता सुलेखा।

कऽ रहल अछि

मजबूर हमरा

बेटीसँ दूर हमरा।

शूल बनि मनमे गड़ैए

बेटी तँ गर्भमे चुभैए

बंद करू आब अत्याचार

बसाबऽ दिअ हमरा

बेटीक संसार।

अपना दिस निहारू।

बड़ केलौं

उक्टा पेंच

अक्कर खिद्यांस

ओकर धेंस

कहियो तँ आंगुर

अनेरो उठाउ

अपन मनकँ बुझाउ।

उठैए जे

एगो आंगुर ककरो दिस

तीन आंगुर देखबैए

यऽ अपने दिस।

मारू अइ साँपकेँ

निकालू मनक अइ काँटकेँ

जतेक साफ नजर रखबै

दुनिया ओतेक सुन्दर देखबै।

बहुत भटकलै

खोजैले भूत

दुबकि कऽ बैठल छल

हमरे करेजामे

बनि कऽ सूत।

१०

मजबूर किसान

बाबू केना हेतै आब

सुखल मन तरसल आँखि

71

पाबनि त्योहार।

बीसे-बीस दिन पर

हेतै खर्चाक भरमार

नै अगहनक करारी पर

देतै कोइ पैंच उधार

बाबू केना हेतै आब

पाबनि- त्योहार।

छुछे छाछी रहि जेतै

अबकी चौरचनमे

मरूआ भेल अलोपित

आब मिथिलामे

केना कि उपाय करिऐ

कतऽ सँ करिऐ हम जोगार

बाबू केना हेतै आब

पाबनि-त्योहार।

जतरामे धिया-पुता

लव कपड़ा मंगै छै

दिवालीमे फटक्काले कनै छै

छट्ठी मइयाक की

अरग देबै अइ बार

बाबू केना हेतै आब

पाबनि-त्योहार।

स्वच्छ समाज

छोड़ि जाइ छी एगो चेन्ह हम।

हम निस्प्राण भऽ गेलौं

मुदा हमर दरद सदि जीबैत रहत,

हम चुपचाप जा रहल छी

मुदा हमर चिख अहाँकेँ

हरिदम झकझोरैत रहत।

दोष हमर नै,

सुखल मन तरसल आँखि

73

अहाँक मानसिकताक छल

बुराइ हमरामे नै

अहाँकेँ संस्कारम छल।

बेजुबान हम नै

अहाँकेँ बना कऽ गेलौं

जा रहल छी,

हम खामोश भऽ कऽ

अपन अवाज बुलंद केने

जा रहल छी ।

अगर अछि अहाँमे

जिंदा कनियो मानवता

तँ बचाउ दोसर ‘दामिनी‘क लाज,

यएह हमर इच्छा अछि

निस्पाप हुअए अपन समाज,

करू नै समर्पित हमरापर

फूल आ मोमबत्ती गाड़ि

देब हमरा सहि श्रर्द्धांजलि

तँ करू संकल्प बनाएब अहाँ

नारीकेँ जीऐ लेल एगो स्वच्छ समाज।

२

माय एक चुटकी नुन दअ दे...

आइ हम जनलिऐ

बेटी आ बेटामे

कि भेद होइ छै,

गर्भमे बेटी

किअए गरै छै।

नारीक दुःख

नारिये जनै छै,

तँए तँ हर माए

बेटी जनमबैसँ

डरै छै।

जइ बेटीकेँ माए

जीवन दइ छै,

वएह बेटीकेँ

समाजक अत्याचार

मारै लेल मजबूर करै छै।

बेआबरू भऽ कऽ

मरैसँ तँ नीक

माए इज्जत कऽ तूँ

मौत दऽ दे

ई पुरूष सत्तात्मक समाज छीऐ

माए जनमिते तूँ हमरा

एक चुटकि नुन दऽ दे।

१

बेटी

छोड़ऽ कक्का

बेटा-बेटी कऽ

अंतरक खेल।

सोचऽ तूँ एक बेर
बेटा-बेटी मे
की फरक भेल।
बेटा कनेतऽ
पर बेटी पोछतऽ लोर
बेटा पर एक कुल
मुदा बेटी पर दू कुल
करतऽ इजोत।
थाकि-हारि कऽ जब तूँ
कतौ सँ एबहक कक्का
स्नेह बरसाबै लऽ
आगु जेतऽ बेटी।
कुछ दिन कऽ
मेजमान बनि ई तोरा
घर आइल छऽ
तोहर दुलार आ
आशीष लऽ कऽ

चुप-चाप चलि जेतऽ बेटी।

तब फाटतऽ तोहर कोढ़

आ अंतरमन सँ

एतऽ एगो आवाज कि

अगला जनम तूँ फेर

अइ आंगन मे अहियहन बेटी।

२

कारी-बजार

कारी-धन कारी-बजारी

कारी चादरसँ लिपटल

हमर देश अछि।

केना बेदाग करब अकरा

सगदर कारी-स्याह अछि।

निचाँ-निचाँ की देखब

जब उपरे अंधकार अछि

कोनो दोसर नै रंग अतऽ

सगदर कारी-बजार अछि।

राष्ट्रपति होए या प्रधानमंत्री
सब कऽ सब दरिद्र अछि
कि कहब बेशर्मी कतेक हद तक
अकरा देहमे समैल अछि।
भगाबू अइ दिम्मक कऽ
अपन घर सँ
नै तँ ई हड्डी तक
खाइ लऽ तैयार अछि
सोचु -बिचारू अपनामे
अहीं कऽ हाथमे
कैलक सरकार अछि।

३

शब्दक खेल

चुन्नु- अ सँ अनार
      आ सँ आम
रटैत जी थोथरा गेल

आब नै खेलब हम

ई शब्दक खेल।

माँ- तँ चलू उराबऽ

चलि पतंग

हरियर अपन

लाल ओकर

पिअर भइया कऽ

आब कहू सब मिलाकऽ

कतेक उड़ि रहल अछि पतंग।

चुन्नु- अतौ तँ अछि सवालक जाल

माँ हमरा पहिले ई बता दिअ

एक सँ आगाँ कतेक होइ छै

से सिखा दिअ

माँ- तँ कहू आब

कहियो नै उबबै

अइ खेल सँ

नै उलझबै अंकक अइ जाल सँ

तब हम अहाँ कऽ सब सिखैब।

सब सबालक जबाब

अहाँ कऽ बनैब।

४

माँ बता तूँ एगो बात

माँ बता तूँ एगो बात

खोल तूँ ई मेघक राज

के सब रहै छै ओतऽ

कि छै ओकरा सबहक काज।

भोरक सुन्दर सुरज

दुपहर कऽ किए जरबै छै

साँझ पड़ैत फेर

कतऽ हरा जाइ छै।

राइत कऽ अबै छै मामा

सजा कऽ मोतियक थार

कि ओतौ छै बहुत बड़का संसार।

कहियो देखै छी कनिये

कहियो बेसी

कहियो तँ साफे नै देखाइ यऽ

तूँ बता माँ मामा एना किए

नुका-छुप्पी कऽ खेल खेलै यऽ।

सुनु बउआ हमर बात

बिना पढ़ने नै खुलत ई राज

जेना-जेना अहाँ पढ़ैत जएब

सब भेद कऽ भेदैत जएब।

५

अनहार घरमे हत्या

हम बेटी छी तँ

हमर कोन दोष

हमहुँ तँ एगो जान छी

हमरो आँखि यऽ

कान यऽ मुँह यऽ

हम नै निष्प्राण छी।

नै चलाबू एना कैंची
हमर मन डराइ यऽ
देखियौ हमर कटल हाथ सँ
लाले खुन बहै यऽ।
अनहार घर सँ तँ
निकलऽ दिअ
एक बेर तँ हमरो
अइ निष्ठुर संसारकँ देखऽ दिअ।
केना लेलक अतऽ जन्म सिता
ओइ रहस्यकँ जानऽ दिअ
हमरा नै मारू
जकरा लोग पुजै छै
ओइ मायक मुँह देखऽ दिअ।

बेटी

जनम भेल तँ कहलक दाइ

सुखल मन तरसल आँखि

83

भेल दू हाथ धरती तर

कोइ नहि सोचलक हमहुँ जान छी

कहलक दही नून तरे-तर।

बावू कपार पीटलनि

माय भेल बेहोश

जँ हम जनितौं तँ

नहि अबितौं एहि लोक

आँखि अखन खुलल नहि

कान अखन सुनलक नहि

आ बना देलक हमरा आन

कहलक कोनो अट्ठारह बरख रखबिहि एकर मान

ने केकरो किछु लेलौं हम

ने केकरो किछु देलौं हम

जे माय हमरा जनम देलक

ओकरो मुँह नहि देखि पबलौं हम

अजब दुनियाँ अछि ई

अछि गजबक लोक

किएक करैत अछि एना

किएक भेजैत अछि बेटीकँ परलोक

अबैत एहि धरतीपर

इजोतसँ पहिल भेल अन्हार

हमहुँ डुबि गेलौं

आ डुबि गेल संसार

समाज बनल हत्यारा

बाप बनल जल्लाद

बसैसँ पहिने उजारि देलनि

बेटीक संसार।

१

भेल पुरा आस
उमरल ऐल
देखी कारी मेघ
चलि गेल धान
पुबरिया खेत।
बंजर भूमि आब
पनिया जेतै
मिटतै आब अपनो दुख
सगरे अन्न उझला जेतै।

बुच्ची लऽ लब आंगी अनबै

तोरा लऽ लव साड़ी

अबकी जतरामे

निर्मली बजारक खेबै पकौरी।

आइ पुबाइर बाध रोपबै

काल्हि पछबाड़ि

परसू उत्तरबाड़ि आ दक्षिणबाड़ि

चारू दिस लहलहेतै खुशहाली

सुख-सम्पन्न हम सब भऽ जएब।

२

भाइयक स्नेह

जब छोट छेलौं

तँ कतेक स्नेह

करै छल हमरा भइया

हमर एगो लोर पर

कतेक रूप बदलै छल भइया

हाथी घोड़ा भालू बनि कऽ

मनबै छल हमरा भइया।

पहिलुक कर हमरा खिया कऽ

फेर सुगा मैना कऽ हिस्सा

सेहो खियाबै छल भइया।

पर आब एगो अलगे रूप बदललखिन भइया

भिन-भिनौजक खेल

खेला रहल छथिन भइया।

कतनो कनै छी

तइयो नै देखै लऽ अबैए भइया।

आब हम नै खेलबै ई खेल

रहि नै सकबै भइया करि कऽ बैर

भगवान हमरा फेरसँ

बच्चा बना दइए

हमरा भइया सँ ओ स्नेह मंगा दइए।

३

अलहर मेघ

बजबैए मेघ

तबला ढोल

बरसाबैए पानि

टिपिर-टिपिर

झनर-झनर

राग अनमोल।

सन-सन-सन

हवा सनसनाय

तन-मन कैं ओ

थिरकाबैत उड़ि जाए।

झमकि कऽ आबैए

कारी बादल

चुमै लऽ

धरतीक चरनकैं

तृप्त भऽ

ई अल्हर बादल

हँसैत खिलखिलाइत

यएह आसमानमे पुनः

विलुप्त भऽ जाए।

सिया तोरे कारण

जनक दुलारी सिया
सहैत एलौं सभ दरद
अहाँ किअए?
रानी भऽ वनमे रहलौं
पतिक खातिर
सभ सुख तियागलौं
पग-पगपर संघर्ष केलौं
हर परीक्षामे खड़ा उतरलौं
तँ फेर ई समाज नै अहाँकेँ
अपनेलक किअए?
जइ पति ले सभ
किछु अहाँ तियागलौं

वएह अहाँकेँ तियागलक किअए?

किअए ने विद्रोह अहाँ केलौं

नारीक हित ले अवाज उठेलौं।

सदखिन सुनै छी हम एक्के बात।

जहन सति सीता नै बचलै

तँ केना बचतौ तोहर लाज?

जौं एगो सीता जे

अवाज उठैइतै,

तँ फेर कोनो सीता

नै परितारित होइतै।

चुप रहैक ई

सजा मिलैए,

कतेक सीता नित

वनवास भोगैए।

ठिठुराबैत जाड़

एलैए जाड़
लऽ कऽ दुखक पहाड़।
केना कटत दिन-राति
केना बीतत
ई जाड़क कड़ारि।
उजरल छौइन
टुटल अछि टाट
नै अछि कोनो ओहार
घरक चारू कात
अछि बाटे-बाट।
पुआरक ओर्हना
पुआरेक बिछौना
केकरा कहै छै
लोग कम्मल

केना कहै छै
होइ छै जाड़ सुहाना।
कहियो घरसँ निकलि कऽ देखियो
एक राति अतए बिता कऽ देखियो
ठिठुइर कऽ मरैए
लोग नित कतेक जना।
गरिबेकँ तँ
भगवानो मारै छै
अगर नै!
तँ फेर पत्थरक देह बना
किअए नै भेजै छैक।
जे ढाहि दइ
सरकारक भीखकँ
अनुदानक नाओंपर
भेटैत मजाकक
इन्दिरा-अवास आ
सरकारी राहत कोषकँ।

किछु कविता

१. बंदिश

हाथ-पएर दुनू अछि

पर नै चलि पबै छी

नै किछु करि पबै छी

जुबान अछि पर बउक बनल छी

बस आँखि सँ देख रहल छी

कान सँ सुनि रहल छी

अत्यन्त वेदनाक भट्ठीमे

अपन देह झुलसा रहल छी

जिंदा लहास बनि जी रहल छी

ककरा सँ कही

ककरा बुझाबी कि हमहुँ एगो जान छी

कही ओइ व्यवस्था सँ

कि व्यवस्था बनबैबला लोक सँ

कि स्वयंसँ।

सहज ई मानि ली कि हम चुप

रहै लऽ बाध्य छी

किएकि हम लड़की छी।

२.

पैसा सँ बियाह

कक्का घरमे

बाजै बधइया

होइ छै बुचिया कऽ

बियाह यौ

चारि बहिन हमहुँ छी

चारू कऽ चारू कुमार यौ।

दिन-राति मेहननि करि

रोटिये टा कऽ करि

पबै छी जोगार यौ

छी हम महगाइ आ गरीबी

कऽ मारल

अछि बाबू हमर किसान यौ।

दिदियो कऽ देखै

लेल ऐल

गाम-गाम सँ कतेक ने

बरतुहार यौ

पसिन करि खाइयो कऽ गेल सबटा

तरूआ आ पान यौ।

तइयो अछि हमर दीदी

२५ साल सँ कुमार यौ।

कहलक सब बरतुहार

बिना दहेजक केना

चलत काम यौ

हम छी बेटा बाला

अपन पैसा खर्चा करि

नै करब बियाह यौ।

अइ युगमे लड़की

सँ नै पैसा सँ

होइत अछि बियाह यौ।

३.

काँच बाँस जकाँ लचपच उमरिया

काँच बाँस जकाँ लचपच उमरिया

डगमगैत अछि डेग यौ

केना भरब हम गगरी

केना चलब डगर यौ।

किया जनमलउ अहि धरती पर

की छल हमर गुनाह यौ

माय-बाबू नीक सँ

बाइजो नै पाबलउँ

बनलौं अपने हम माय यौ।

ज्ञान,पोथियक दुनिया सँ

रहलौं जे अनचिनहार यौ

की कहब हम की

केहन अछि हमर जिनगी

भेल पुरे संसार अनहार यौ।

४.

मनक वेदना

रहि-रहि एगो

हुक उठै यऽ

सउँसे देह दगद

भेल जाइए

आब नै बचत मान

भऽ रहल छी हम निष्प्राण।

जिनगी बनि गेल धुँआ

हवा कऽ मलारो सँ

काँपि उठै यऽ

सब रूआ।

अछि सब रस्ता अंजान

करिया गेल मनक अरमान

कतऽ ठार छी

कतऽ जा रहल छी

नै अछि हमरा किछो ज्ञान

पर बुझैत छी हम अतेक कि

जिन्दगीक आखरी सफर

लऽ जाइत अछि समसान।

५.

शरहद

ई शरहद, ई सीमा

कथी लऽ?

जमीन बाँटै लऽ!

पर जमीनक संगे

मन बँटाइत अछि

इंसानकँ इंसानसँ

जुदा करैत अछि।

हम एक जाति छी

मानव जाति!

फेर किए नै कोइ

ई बुझैत छी

जाति-पाति लऽ किए लड़ै छी?

शरहद कऽ नाम पर

भाइ-भाइ कऽ बाँटै छी

धिक्कार अछि हमरा

अपन मानवता पर

जे अहि शरहदक सीमा

मे बैंध गेल छी

हमरा सँ नीक

तँ ई हवा, पानि

आ पक्षी अछि

जे स्वतंत्र भऽ अइ

छोर सँ ओइ छोर तक

अपन दोस्त बनबैत अछि

पर हम अइ दिवारक

बिच कैद छी

जब लगैत अछि

जे आब दुरी मिटा जाएत

भाइ-भाइ सँ गला मिलत

तब ई दिवार

आर मजबूत भऽ

गगन कें छुबऽ लगैत अछि

आखिर कहिया ई

शरहद हटत?

कहिया ई मनक दिवार गिरत?

हमर अबैबला पीढ़ी

यएह दीवार मे कैद रहत?

किछु बाल कविता

जतरा

बाबू आबि रहल

अछि जतरा

लेब अहाँ सँ लब कपड़ा

घुरै लऽ जएब

अहाँ संगे मेला

देखब ओतऽ

कठपुतलीक खेला

कीनब हम

एगो उड़न जहाज

तइ पर बैइठ

घुमब सगरे संसार।

२

अंकक मेल

चलू खेलब आइ हम एगो खेल

जइमे एक संगे करब कतेक अंकक मेल।

1.2.3.4.5.6.7.8.9.दस

अइ सँ आगू चलत एगो बस।

छुक-छुक नै

ई तेज दौड़ै यऽ

एक पर एक एग्यारह

भऽ जाइए।

एक पर दू बैठ 12

एक पर तीन बैठ 13

एक पर चारि बैठ 14

एक पर पाँच बैठ 15

एक पर छअ बैठ 16

एक पर सात बैठ 17

एक पर आठ बैठ 18

एक पर नअ बैठ 19

दू पर बैठ जिरो बीस भऽ गेल

पहिले एक असगर छल

आब उन्नीस टा भऽ गेल

अहिना एकता अपन जीवन

मे अहूँ लाउ

मिल कऽ अपन शक्ति बढ़ाउ।

३

माय हमरा एगो

बहिन आनि दे।

चल बजार उ

बजैबला गुड़िया

कीन दे।

जे हमरा भइया कहत

हर साल हमरा हाथ

पर राखी बान्हत

उ चुलबुलिया मुनिया आनि दे।

किए तूँ हमरा

असगर रखने छऽ

हमरासँ बहिनक स्नेह

छिनने छऽ

तू अपन कान्हाकेँ

द्रोपदी आनि दे

माय हमरा एगो बहिन आनि दे।

ककर भैया तोरा सतबै छउ

कोन बात छै जे तोहर

आँखि भरै छउ

तूँहो तँ ककरो बहिन छी

तँ फेर किए हमरा

बहिन लऽ कंश बनल छी

हमरा तूँ एगो मैका दऽ दे

माय हमरा बहिनक जिनगी बाझि दे

ई सोन चिरैया चिड़िया आनि दे

माय हमरा एगो बहिन आनि दे।

विहनि कथा खण्ड

कैंसर

रोगी- बाप रे बाप ....आब नै जिबै.......

माय गे माय..............हो...........दौड़ऽ होउ लोक सब

डॉक्टर- चुपु, ई अस्पताल छिऐ, अहाँ कऽ दलान नै जे एना ढ़करै छिऐ। की भेल, देखै सँ तँ भला चंगा छी, कोन तकलीफ यऽ।

रोगी- डॉक्टर साहेब, हम एगो आम आदमी छी। हमरा कैंसर भेल अछि जे हमर प्राण लऽ कऽ हमर पीछा छोड़त। हमरा मरै कऽ गम नै अछि पर हमर पुरे परिवार कऽ सेहो ई कैंसर अपना गिरफत मे लऽ रहल अछि। की हमरा आ हमरा परिवार कऽ मुक्ति मिलत?

डॉक्टर- हअ-हइ, किएक नै। दुनियामे एहन कोनो बीमारी नै अछि जकर आइक युगमे इलाज नै होइत अछि। पर अहाँ कऽ आ अहाँक पुरे परिवार कऽ कैंसर अछि ई अहाँ केना जनै छी? एना भइए नै सकैत अछि। देखै सँ तँ अहाँ पागल नै लगैत छी, फेर पागल जेकाँ बात किए करैत छी। पहिले जाँँच कराउ, फेर इलाज शुरू करब।

रोगी- डॉक्टर साहेब, की जाँचब अहाँ, कि हमरा घरमे आइ सात दिन सँ सब उपास यऽ कि नै? सरकार घर मे गोदामक-गोदाम अन्न सड़ैत अछि पर हम गरीब एक मुटठी अन्न लऽ तरसि रहल छी। आकि ई जाँचब जे हम कतेक दिन सँ प्यासल छी। ने देह मे आगि लगबै लऽ मटिया तेल अछि ने जहर खाइ लेल जेब मे पाइ।

डॉक्टर- अहाँ की कहि रहल छी? हमरा समझमे किछु नै आबि रहल अछि।

रोगी- कहियो गरीबी कऽ जिंनगी जिलिऐ हऽ डॉक्टर साहेब। हमरा मँहगाइ, गरीबी, लाचारी आ बेरोजगारी अइ तरहक अनेक बिमारी गरसने अछि जे आब कैंसरक रूप लऽ लेलक। कहुँ अहि लाइलाज बिमारी कऽ इलाज अछि अहाँक डॉक्टरी दुनियामे?

डॉक्टर- ऐ बिमारी सँ तँ कोइ नै बचल अछि। ई तँ दिन-प्रतिदिन भयंकर रूप लेने जाइ यऽ। अकरा सँ मुक्ति तँ मौते दिया सकै यऽ।

हमर संस्कार

आंगनमे बैसि बिट्ठू कखैनसँ ने चारू भर चौकन्ना भऽ सभ घरकेँ निग्हारैत छलाह। पता नहि कतैक सबालसँ अपन माथकेँ ओझरौने छलाह। ओ सदिखन सोचैत छलाह- किएक होइत भीनसर घरमे बगड़ा फुदकए लगैत अछि। आखिर ओकर प्राण हमरे घरमे किएक लटकल रहैत अछि। किएक नहि ओहो आन चिड़ै जकाँ गाछ-बिरीछपर रहैत अछि?

एक दिन बाबासँ बिट्ठू पुछलक- ‘‘बगड़ाकेँ हमरा सभसँ किएक नै डर होइत छै? हम तँ ओकरा कखनो नोकसान पहुँचा सकै छी।’’

बाबा बिट्ठूक बात सुनि मुस्कुराइत बजलाह- ‘‘बौआ, हमर उँच संस्कारक पहचान यएह बगड़ा छी, जे नीकसँ बुझैत अछि जे हमर संस्कार एकरा नोकसान नहि पहुँचा सकैत अछि। मिथिलाक समर्पणक खिस्सा विश्व भरिमे पसरल अछि। जहिना बच्चाकेँ जकरासँ दुलार भेटैत अछि ओ ओकरे अपना बुझए लगैत अछि। एहिना ई बगड़ा मिथिलाक घर-घरमे दुलार पबैत अपन घर बसबैत अछि।’’

करैलाक मीठ गुण

सासु-पुतौहक नाता तँ खटगर-मीठगर होइत अछि। रगर-झगरक बीच पीसाइत ई संबंध हमरा समाजमे एक प्रतिष्ठित उँचाइ पबैत अछि। एहि ठकराउक मुख्य कारण ई होइत अछि- ने सासु पुतौहकँ बेटी जकाँ दुलार करैत अछि आ ने पुतौह सासुकँ माए जकाँ सम्मान।

प्रियांसी बी.ए. पास नव विचारक महिला अछि। जे सासुरमे पएर रखैत सासु-पुतौहक उँच-निचक दीवारकँ खदेर देलक। ओकरा नैहरसँ ई बात मनमे गड़ि गेल छल जे सासु माने हुनकर माए कहैक मतलब ई जे ओकरा नजरिमे सासु आ सतौत माए दुनू एक्के सिक्काक दू परत छी। एहिसँ प्रियांसी सोचलक जे सासुर जाइत ई बुढ़िया अपन सासु गिरि करैत एहिसँ पहिले हम एकर लगाम तनने रहब। तखने हमरा ई सासुर बसए देति।

कोहवरसँ निकलैत प्रियांसी डाढ़मे आँचरक खुट खोंसैत तइपर दुनू हाथ धऽ सासुकँ कहलक- ''सुनि लौथु हम जेना नैहर रहैत छलौं तहिना रहबनि, हम सासुरक जहलमे नहि खटबनि, मंजूर छन्हि तँ कहौत नहि तँ हमरा दुनू परानीकँ अखने अलग कए दोथू।'' घोघ तरसँ बाजि उठल कनियाँकँ ई बोली सुनि सासु तिलमिला गेलीह। मुदा मर्यादाक सम्मान आ कुटुमक ख्याल करैत बजलीह- ''आब ई राज-पाट अहींकँ छी। एकरा अहाँ जेना राखी आइसँ एहि परिवारक मान-सम्मान हम अहाँकँ सोपैत छी।''

प्रियांसी अपन व्यवहारसँ सासुरक लोककँ नाकोदम कए देलक। जएह गरम मिजाज नैहरमे छल सएह तेबर सासुरोमे काइम करैत ओ उधियाइ छेलीह। ने भैंसुरक लेहाज आने ससुरक इज्जत ओकरा लेल सभ ओकर दिअर जकाँ छल। घरबलाकँ तँ गणेशीए बुझैत छलि। ओ

अपना आगाँ सभकँ हीन बुझि हँसि दैत छलि। एकर एहि व्यवहारकँ लोक ओकर मतिछीन्नू बुझि चुप रहि जाइत छल। कोइ ओकरासँ मतलब नहि रखैत छल। ओकरा घरबला सेहो ओकरासँ हरिदम रूझाइल-रूझाइल रहैत छल।

किछु मासक बाद प्रियांसीकँ अपन व्यवहार आ परिवारमे अपन स्थितिक नीक जकाँ ज्ञान भऽ गेल ओ बुझि गेलि जे लड़कीकँ हरदम बेटीए नहि पुतोहुओ बनि कऽ रहबाक चाही। एगो नीक मनुक्खक निर्माण बदलैत परिस्थिति आ समऐ करैत अछि। अगर नदीमे बाढ़ि नहि आबै तँ तलाबक पानि समुद्रक गहराइकँ कोना जानि सकैत अछि। तहिना बेटीकँ उछलैत पैरमे मान-मर्यादा, परिवार, समाज आ देशक दायित्वकँ बेड़ी बान्हि ओकरा अपन कर्तव्यक ज्ञान कराओल जाइत अछि।

सासु बेटीसँ बनल पुतौहकँ फुलक पगरी सोपैत अछि। जहिमे ओ अपन ई काज कुमहार जकाँ करैत अछि। जेना कुमहार माटिक बर्तनकँ पीट-पीट आ भट्ठीमे पका कऽ दुनियाँ योग बनबैत अछि। ओहिना सासु कखनो मीठगर तँ कखनो तीतगर बोलीसँ मक्खनसँ पालल बेटीकँ दुनियाँक अनुरूप बना कऽ ओकर व्यक्तित्वक निर्माण करैत अछि।

कतऽ जा रहल छी हम!

कतऽ जा रहल छी हम!

कतौ तपि रहल अछि,

कतौ गलि रहल अछि,

कतौ धँसि रहल अछि,

तँ, कतौ उठि रहल अछि आइ धरती!

तपा रहल अछि अकरा मनुखक बढ़ैत भूख, जे दिन-प्रतिदिन गाछ-वृक्ष काटि अकरा छत्रहीन बनबैत अछि। समाजक कुरीति अकरा गला रहल अछि। अपन बेटी पर देख अत्याचार ई बेबस भऽ धँसि रहल अछि। देख ई सभ विडम्बना माँ धरती क्रोधसँ पहाड़ बनि संकल्प करैत अछि कि सम्पूर्ण जहाँक अइ विशाल चोटीसँ झाँपि अकर सर्वनाश कैर दी।

मुदा ओ कुछ नै करै लेल मजबूर अछि। जेना आइ धरती बेबस लाचार आ कड़ीसँ बानहल देखाइत अछि ओहिना हमरा समाजमे नारीक स्थिति अछि। आइ भाइ जल्लाद बनल अछि आ बाप पापक रूप लेने अछि। प्राचीन कालसँ जइ रिश्ताकेँ भगवानसँ पहिल जगह मिलल अछि

आइ ओकर नामो लइ सँ घृणाक बोध होइए। आइ हमरा समाजमे सभसँ अधिक नजाइज सम्बन्ध गुरू आ शिष्याक बीच अछि। हम एगो अरमान मनमे बसा अपन बच्चामे अच्छा संस्कार आ उच्च शिक्षाक अभिलाषा लेने गुरू लग जाइ छी मुदा वएह गुरू हमर आत्मसम्मान केँ ठेस पहुँचाबैत हमर बच्चाक साथ शोषण करैत अछि। भाइ शब्द अतेक पावन, अतेक पवित्र अछि कि सभ बहिन भाइ शब्दकेँ सम्बोधित करैत ई सोचैत अछि कि ई हमर केवल भाई नइ कृष्णक रूप अछि जे युग-युग तक हमर आबरू आ सम्मानक रक्षा करत। चाहे ओ चचेरा ममेरा फुफेरा भाइ किएक नइ हुअए। पर वएह भाइ जब अपन बहिनक विश्वास तार-तार करैत ओकरा संगे बलात्काकार करैए तँ ओकरा की नाम देल जाएत।

जन्म देनहार बाप जकरा पिता परमेश्वर कहल जाइत अछि वएह बाप अपन जनमल बेटी संग पाप करैत अछि यएह समाजमे।

आखिर कतऽ खडा छी हम, कतऽ जाइले डेग बढ़ा रहल छी एक पलक लेल, सोचलेसँ अहि गंदा पैर सँ चलि हम अपन स्वच्छ आ पवित्र समाजक निर्माण कऽ सकैत छी? केवल सादा कागज पर कलम दौड़ेनाइ सिखनेसँ संस्कार आ सोच नइ बदलैत अछि। अपन जमीर आ अपन आत्माक अवाज सुनु आ कहू कि बेटी कलंकक पुरिया अछि कि हमर समाज ओकरा कलंकित करैत अछि।

टूटल मन

एगो जान छल हमरा संगे, ९ महिनाक सुख-दुखक संगी। अनेकानेक सपना हमर, अनेक सवालक जवाब छल। बहुत खुश रहए हमर परिवार। रहै इंतजार सबहक नयनमे कि कहिया ई मास खत्म हएत

आ गुँजत किलकारी आंगनमे। आइ ओ इंतजार खत्म भेल। हम एगो मासूमकेँ जन्म देलौं, हम अपन अंशकेँ ऐ संसारमे आनलौं। हमरा लेल ओ ने बेटा छल ने बेटी। बस हमर संतति छल, हमर अरमान, हमर सपना, हमर भविष्य छल। पर कोइ नै बुझलक हमर ई आश,

कहलक कि दुनियामे आँखि खोलैसँ पहिले ओ आँखि मूइन लेने छल। हम संतोष कइर लेलौं, ई नै बुझलौं कि बेटाक लालचमे ओ बेटीकेँ माइर देलनि। जे हाथ ओइ मासुमक गला पर छल उ एक बेर नै कांपल, ओकर कान अकर रूदनकेँ नै सुनलक। ई हमरे टा नै बहुत नारीक कथा छी। हम अवला नै पर ऐ समाज आ

अपनाकेँ आगु अवला बनैल गेल छी, जबतक हम जुर्म सहैत रहै छी तबतक हम परित्याग, शांति आ ममताक मूर्ति छी। जब ओकर जुर्मकेँ आगु खरा उतरै छी तँ हम कुलच्छनी आ कलंकनी छी। आखिर हमहूँ ऐ संसारक गारीक एगो पहिया छी,

अगर एगो पहिया निकलि जएत तँ असगर कतेक दूर तक अहाँ नै संसारकेँ लऽ जा सकब।

कहिया तक बेटीक बली चढ़बैत रहब आ मायक कलेजाकेँ छन्नी-छन्नी करैत रहब।

एकांकी-नाटक खण्ड

एकांकी- **पात-पातसँ बनल परिवार**

प्रथम-दृश्य-

(बड़की भौजी असगरे तामशसँ लाले-लाल अछि, जेना लगैत अछि जे ओकरा देह मे आ बोलमे कोइ लुंगिया मेरचाय रगड़ि देने हुअए।)

बड़की भौजी- उंउ कइर-झुमरि, कइर-लुठबी बुझै कि छै अपनाकेँ? हमरासँ मुँह लगाओत। नमहर छोटक लिहाज नै, बाप रो बाप मुँहमे मेचो नै परै छै बजैत कला। आय अबए दै छिऐ टुनमा बाबूकेँ, कहबै नै बनत हमरा ऐ मोगिया संगे हमरा भीन करि दिअए।

(शंकर कअ प्रवेश)

शंकर- टुनमा माए, हे यैयय टुनमा माए, कि भेल? एना किआ तिलमिला रहल छी! असगरे केकरा संगे बात करै छिऐ।

बड़की भौजी- ओइ ऊपरबला सँ, जे नमहर बना कऽ तँ पठेलक ऐ घरमे पर भैलू कुत्तो जकाँ नै यऽ। आब तँ छोटकीकेँ बोल फुटए लगलैए। अपन बेज्जति करबैसँ नीक यऽ कि पहिले सर्तक भऽ जाइ। हम भीन हइ लऽ चाहै छी।

शंकर- धुर्रर, बताह भेलिऐ कि! लोग कि कहत चुप रहू। चलु हम हाथ-पएर धोने अबै छी जल्दि खेनाइ लगाउ बड़ जोड़ भुख लगल अछि आ अहूँ कनी संगे खा लिअ तामश हटि जएत।

(पटाक्षेप।)

दोसर-दृश्य-

पंकज- छोटकी कि भेलै यइ? आय भौजी पुरे घरकेँ अपना माथपर उठेने छै।

छोटकी- अहाँकेँ भौजी बेसी बलगर अछि तइ खातिर छोट-मोट बातपर हंगामा खड़ा केने रहैए। असल बात तँ ई छै कि दुनू पावर मिलल छै ने, साउसोकेँ आ जेठानियोकेँ तँइ मति छिन्नु भऽ गेल छै।

पंकज- (तमसा कऽ कहै।) अहाँकेँ बजैक तमीज नै अछि। अहाँ अपन माइयो संगे अहिना बजैत रहिऐ आकि अतए सठियेलियइ हैं। ठीके भौजी कहै छै अहाँकेँ जुवान नै रेती छी रेती। खब्बरदार जे हमरा माए सनक भौजीक विरूध एको गो अनरगल शब्द बजलौं तँ जीह घीचि लेब। धनि ई भौजी जे हम जिंदा छी। बिनु माएक तँ हम अनाथे भऽ गेल रही, यएह भौजी जे माए बनि हमरा सहारा देलक। आइ ओकर एगो बात अहाँकेँ घोंटल नै जाइए।

छोटकी- हम छोट छी तँ अकर मतलब कि बड़काकेँ एड़ी तर मसलैत रही। हम आगू भऽ कऽ लड़ैले नै जाइ छी, मुदा एगो बात बूझि लिअ कोइ आगु भऽ कऽ जे हमरा बात कहत तँ पाछु सँ हम

छोड़ब नै। नमहर लोककेँ अपन बेवहारसँ छोटक आगु नमहर भऽ कऽ रहए पड़ै छै तबे उ नमहर कहाइ छै।

(दूरेसँ शंकरक अवाज सुनाइत अछि)

शंकर- बौआ पंकज हौ कथीकेँ बहस करै छहक दुनू गोरे। आबा घरसँ बाहर आबह। जेना छोट बच्चा लड़ाइ-झगड़ा कऽ फेर एक्केठीम आ ओकरे संगे हसए-खलए लगैत अछि तहिना एकरा दुनूकेँ झगरा छै। तूँ आब एना बात नै बढ़ाबह।

पंकज- अबै छी भैया।

(पटाक्षेप।)

तेसर दृश्य-

(3-4टा बच्चाक संगे पायल आ काजल घरक बाहर खेलाइत अछि। खेल-खेलमे दुनू बहिन आपसमे लड़ए लगैए, तखने बड़की भौजी बच्चाकेँ चिख-पुकार सुनि घरसँ बाहर अबैए आ एक थप्पर अपन बेटी पायलकेँ आ एक थप्पर छोटकीकेँ बेटी-काजलकेँ मारैत अछि।

(थप्पर लगैत पाँच सालक काजल मुँह भरे खसि पड़ैत अछि। तखने छोटकियो दौगल अबैए।)

छोटकि- बाप रे बाप, मारि देलक हमरा बेटीकेँ। मुँहसँ खुन बोकड़ैत अछि। कोइ दौगू डॉक्टरकेँ बजेने आउ। काजल... बेटी काजल....!

(जहिना छोटकी काजलकेँ कोरामे उठाबैत अछि सभ अबाक् रहि जाइत अछि। काजलकेँ मुँहसँ खुनक पमारा निकलैत अछि। काजल मुर्छित भऽ जाइत अछि। बड़की भौजी दौग कऽ एक लोटा पानि अनैए आ काजलक मुँह पर पानि छिटैए।)

बड़की भौजी- बुच्ची काजल, बाबू कि भेल आँखि खोलू।

छोटकी- ई मगरमछक नोर लऽ कऽ सहानुभूति देखबै लऽ अतए नै आउ। हमरा बेटीकेँ ऐ अवस्थामे पहुँचा कऽ आब हमदर्दी देखबै छी! अगर अहाँ एक बापक बेटी छी तँ हमरा नजरिसँ दूर भऽ जाउ। हम अहाँक मुँह देखए नै चाहै छी।

(बड़की भौजी कनैत घर चलि जाइत अछि। पंकज डॉक्टरकेँ संगे दौगैत अबैत अछि।)

डॉक्टर- (काजलकेँ देखि ओकर खुन सब पोछैत) चिंताक कोनो बात नै छै, अगुलका दाँत ठोरमे कनियेँ गरि गेल रहै आ छोट

बच्चा छै तँइ मुर्छित भऽ गेलै। हम किछु दवाइ लिखि दै छी। मंगबा लिअ तीन दिनक खोराक अछि आ घबरा नै किच्छो नै भेलै। बच्चाकेँ अहिना छोट-मोट चोट लगिते रहै छै।

पंकज- चलु डॉक्टर सहाएब, हम अहाँकेँ छोड़ि अबै छी।

(पटाक्षेप।)

चारिम दृश्य-

(बड़की भौजी आ शंकर दुनूक बीच ऐ प्रसंग पर चर्चा होइत अछि।)

शंकर- पायल माए, अहाँ ई ठीक नै केलौं। घरक झगड़ाकेँ तामशसँ अहाँ छोट बच्चापर निकालि लेलौं।

बड़की भौजी- छोटकी आ बौआ तँ यएह सोचै छै कम-सँ-कम अहाँ तँ हमरा समझू, हम तँ झगड़ा छोड़बै खातिर दुनूकेँ कनिकबे जोरसँ मारलिऐ, हमरा कपारमे दोष लिखल छेलै तँइ ई घटना घटलै।

छोटकी- घटना घटलै कि घटना घटेलिऐ। हमरासँ लड़ि कऽ मन नै शांत भेल तँ हमरा बच्चोकेँ नै छोड़लौं।

(पंकज दिश ताकैत) सुनै छिऐ आय अखने भीन होउ नै तँ हम अपना देहपर मटिया तेल छीट कऽ आगि लगा लेब।

पंकज- अच्छा शान्त रहू, हमहुँ नै आब जड़िमे रहब। ऐ खुनक खेल खेलाइ सँ तँ नीक रहत जे अलगे रहू मुदा शांतिसँ रहू।

शंकर- बौआ कि बजै छहक तूँ। एकरा सभकँ बातमे आबि कऽ तुहों अहिना बजए लगलहक। खबरदार जे फेरसँ भीनक नाओं लेलहक।

पंकज- भैया, ई हमर आखिरी फेसला छी। आब हम जड़मे नै रहब।

शंकर- बौआ, लोक कि कहतह, एना नै करह। जल्दिबाजीमे कोनो फेसला नै करल जाइ छै।

पंकज- हमरा लोकक परबाह नै छै अगर परवाह छै तँ अपन बच्चा आ परिवारक। जखनि हमर बच्चा लहु-लोहान छल तखनियेँ हमर मन तोरासँ भीन भऽ गेलौ।

(सभ मुँह लटका अपना-अपना कमरामे चलि जाइत अछि।)

(पटाक्षेप।)

अंतिम दृश्य-

(घरक सभ सदस एक संगे एकट्ठा होइत अछि।)

राधेश्याम- बौआ पंकज, कि भेलै जे बात भीन-भिनाओज पर चलि एलै।

पंकज- बाबु हम कोनो तर्क-वितर्क करैले नै चाहै छी, हमरा जड़मे नै बनैए तँइ हम भीन हएब।

राधेश्याम- छोट-मोट बातपर घबड़ेनाइ आ जिनगीक संघर्षसँ मुकरनाइ ई इंसानक काज नै भगोराक काज छी।

पंकज- बाबू, आय हमर बेटीकेँ ई हाल भेल काल्हि किछु और हएत। अतेक दिनसँ काजलक माए संगे होइत रहै तँ हम किछो नै कहैत रहिऐ, आब हमरा बच्चा संगे करए लागल अखनो जे हम किछो नै बजब तँ कहीं काल्हि अंजाम ईहोसँ बूड़ा नै हुअए।

राधेश्याम- बौआ, काजल संगे जे भेलै उ संयोग मात्र रहै। एनाहियो तँ भऽ सकैए कि काल्हि आइयोसँ नीक होय। बौआ भिन्न भेनेसँ खाली अंगना नै मनो बटाइत अछि। सम्मलित परिवार एक शरीर जकाँ होइत अछि। जेना शरीरक कोनो अंगमे एगो काँट गड़ैसँ ओकर दरदक लहरि पुरे शरीरमे दौगैत अछि तहिना सम्मलित परिवारमे कोनो एक व्यक्तिकेँ किछो हो छै तँ ओकर दरदक एहसास पुरे परिवारक हर सदस्यकेँ होय छै। असगर रहनेसँ इंसान स्वार्थी भऽ जाइत अछि। जेना शरीरक कोनो अंगमे घाव भऽ गेलापर ओकरा काटि कऽ अलग करि कऽ बजैए मलहम लगा कऽ ठीक करल जाइत अछि, तहिना परिवारक बीच बरहल मन-मोटओकेँ प्यारक मलहमसँ आ आपसी समझौतासँ दूर करैत अछि। आय बड़की कनियाँकेँ एक थप्पर तोरा नजरि एलह आ ओकर अतेक सालक दुलार बिसरि गेलहक। जे भौजी माए बनि हरिदम तोरा आगु ठाढ़ रहह उ अगर तोरा बेटीकेँ एक थप्पर माइरे देलकह तँ कि गुनाह केलकह।

छोटकि कनिया हमर एगो बात सुनह, सासुरमे सासु माएक रूप आ दियादिनी बहिनक रूप होइत अछि। ओकरा जाबे तक जिनगीमे उतारबहक नै घर स्वर्ग नै बनतह बस मकान बनि कऽ रहि जेतह। जतए रहै आ खाइक सुविधा होय छै और किछो नै।

(सब एक संगे हाथ जोड़ि कऽ)

बाबु हमरा सभकेँ माफ करि दिअ, हम सभकेँ सभ गुनेहगार छी। जँए अहाँकेँ मन दुखेलौं। हम आपसमे कहियो नै लड़ब ने कहियो भीन हएब।

(पटाक्षेप।)

इति।

नाटकः- **शिक्षित बेटी**

प्रथम-दृश्य

दुलारी- माय..................बाबू...... देखियौ, हमर परिक्षाफल ऐल। जइमे हम सभसँ अधिक अंक सँ उतीर्ण भेलौं।

फूलदाय- एना किए चिकरैय छऽ। लगैए जेना कानक झिल्ली फाटि जएत। सभ काज राज छोड़ि कऽ मुँह कें अगोरने रहै छऽ किताबेमे। आब ई चिटठा लऽ कऽ डकरने फिरै छऽ। सभ तोहर बापक सनकी छियौ जे तूँ एना उधियाइ छी। ला अनऽ, आइ अकरा चुल्हामे झौकि दै छिऐ।

दुलारी- माय, ई एक टुकरा कागज नइ, हमर साल भरक मेहनत छिऐ, हम नइ देब।

फूलदाय- तूँ नइ देबही तँ आइ ई झारू तोरा पीठि पर टुइट जेतौ।

(फूलदाय झारू लात घुसा दुलारी पर बरसाबैत भद्दा-भद्दा गारि दैत आ हुनकर हाथसँ अंकपत्र लऽ कऽ खुण्डी-खण्डी कऽ दैत अछि।)

पटाक्षेप

दोसर दृश्य

खट्टर-दुलारी बेटा, दुलारी कतऽ छहक।

दुलारी-अबै छी बाबू जी!

खट्टर- आइ तँ तोहर परीक्षाफल अबैबाला छेलऽ, कि भेलऽ? अच्छा जा तूँ अपन अंक-पत्र नेने आबऽ। हम तोरा लऽ एगो तोउफा आनलिअ, जकरा देख तूँ खुश भऽ जेबहक। हम तोरा लऽ कलम आनलिअ, आब जल्दी जा कऽ हमर उपहार नेने आबऽ।

(दुलारी चुपचाप ओतै बैठ दुनू आँखि सँ नोर बहाबैत यऽ, तखने फूलदायक प्रवेश।)

फूलदाय-अहींक दुलार अकरा बिगाड़ि कऽ राखि देलकैए। जेना पढ़ि-लिख कऽ हमरा कमा कऽ खिऐत बड़का मसटरैन बनबै लऽ चलल, के करतै बियाह। कतौ बिएबहक तँ पहिले चुल्हा लग घुसकेतऽ बेटीकेँ। कॉपी-कलम पकड़ा नै ओकिली करै लऽ लए जेतऽ, बुजलहक कि नै।

खट्टर-बेटा, तोहर मायक तँ आदते छऽ बजै कऽ। छोड़ऽ, तूँ कहऽ की भेलऽ स्कूलमे।

(दुलारी नोराइल आँखिसँ चुपचाप माय आ बाबू दिस निहारैत रहैए।)

फूलदाय-गइ सून, दुआर पर गोबरक ढेर,ी जो उठाकऽ महार पर पाथने आ। आ अकर बात सुनमे तँ अहिना कुहल जेमऽ। बर ऐल पढ़ै-लिखै बाली। देखै छियौ, आब तोरा के पढ़बै छौ।

खट्टर-अहाँ बताह छिऐ कि! अपनो जनमल आन लगैए अहाँकेँ। तँइ तँ तूँ निपुत्र छी। डाइन कहाँकऽ। भगवान तोरा बाँझे रखितौ तँ नीक होइत।

पटाक्षेप

तेसर दृश्य

(किछु दिन बाद दुलारीक शिक्षकक हुनकर घरपर आगमन।)

शिक्षक-खट्टर................यौ खट्टर...... कतऽ छी यौ।

खट्टर-मास्टर साहेब प्रणाम।

शिक्षक- प्रणाम-प्रणाम! लिअ, आइ हम अहाँ कऽ मुँह मीठ करै लऽ एलौंए।

खट्टर- की खुशीमे!

शिक्षक- किए, अहाँ कऽ नै बुजहल अछि जे अहाँक बेटी अहि गामक संगे अपन जिलोक नाम रौशन केलक। आइ हमरा गर्व भऽ रहल अछि जे हम दुलारी जेकाँ होनहार छात्राक शिक्षक छी।

खट्टर-पर दुलारी तँ हमरा किछु नै कहलक। हम तँ ई बुझै छेलौं कि दुलारी बोड परीक्षामे असफल भऽ गेल। दुलारी..........बेटा दुलारी........

दुलारी- जी बाबूजी!

खट्टर-बेटा, हमरासँ अतेक खुशीक बात केना छुपा कऽ राखि लेलौं।

दुलारी-बाबूजी, ऊ माय हमर अंकपत्रकेँ.. (कहैत दुलारी कानऽ लगैए।)

शिक्षक-दुलारी, आइ तूँ गर्वसँ हमरा सभक सर ऊँच कऽ देलऽ। खट्टर! दुलारीकेँ सरकार १० हजार रूपैया आ इंटर कॉलेजमे दाखिला संगे दू सालक पढ़ै-रहै आ खाए कऽ खर्चा सभ देत। आ हम शिक्षकगण

स्कूलक तरफसँ ५ हजार रूपैया अहाँ कैँ देब जे अहाँ अपन बागमे अतेक सुन्दर फूल उगेलौं, पूरे समाजसँ लड़ि अपन बेटीकैँ आगू बढ़ेलौं। आब सभ अपन बेटीकैँ बेटा जेकाँ पढ़ैत।

पटाक्षेप

चौथा दृश्य

(अपन पत्नीसँ)

खट्टुर-आब कहू बेटी कमाकऽ देलक कि नै! हम एहन दीप जरेलौं जकर प्रकाश पुरे जिलाक लोक देखलक। कि अहाँक मन अखनो अनहार यऽ?

फूलदाय-हमरा माफ कऽ दिअ दुलारी बाबु, हमरा सँ गलती भऽ गेल, हम अनपढ़ नै। बुझलौं शिक्षाक की मोल होइए। जब हम घर सँ निकलै छेलौं तँ लोग सभ ताना मारै छेल, कहै छेल, बेटीकैँ बेटा जकाँ स्कूल भेजनेसँ देखबै, नाक कटैत। आइ जाइ छी हम, वएह लोग कैँ कहै लऽ कि देखियौ, हमर बेटी नाक नै कटौलक बल्कि सर ऊँच केलक।

खट्टुर-अच्छा चलू, दुलारी आब दू साल पढ़ै लऽ पटना जएत, तकर तैयारी करू।

फूलदाय- हऽ दुलारी बाबु, जरूर।

पटाक्षेप

अंतिम दृश्य

(दू सालक बाद।)

खट्टर-बेटा, आब आगू कि करबहक? और पढ़बहक!

दुलारी-बाबु आगाँ तँ पढ़ब मुदा अहि संगे हम एगो काम सेहो करब, अपन गाममे प्रोढ-शिक्षा अभियान शुरू करब।

खट्टर- ई की होइ छै!

दुलारी-बाबू जाबऽ तक जड़ि नै स्वच्छ हौत तँ निक डारि केना पनपत। जबतक नारी शिक्षाक मोलक एहसास नै हएत तब तक कोय अपन बेटीकेँ नै पढ़ैत। बाबू हम अपन गामक सभ बेटीकेँ दुलारी बनैत देखऽ चाहै छी।

खट्टर-हँ बेटी, अहिमे हम अहाँक संग छी।

अक्षर-अक्षर दीप जलत

कक्का-काकी,बाबा-दाय

सभ मिल कऽ पढ़त

तबे बेटा-बेटीक भेद मिटत

आ समान हक सँ दुनू आगू बढ़त।

नाटक

अंधविश्वास

प्रथम दृश्य

गंगा- बउआ… … …..बउआ, सुतल छहक की, देखहक बाबू दरबाजा पर बजबै छऽ।

शंकर- कि, आ..हू हू हू… ।

गंगा- कि भेलऽ। एना किए कराहै छहक। माय गे, माय हो, देह तँ झरकैत छह। बउआ आँखि खोलऽ, (रूदन स्वरमे) हयौ सुनै

छिऐ, दौड़ू यौ, देखियौ बउआ कऽ कि भेल। यौ, आँखि ताँखि उलटेने छै यौ, जल्दी आउ ने।

(रामाक धोती सम्हारैत आंगनमे प्रवेश)

रामा- एना चिकरनाइ भोकरनाइसँ काम नै चलत। जाउ दौड कऽ गोसाईं घरसँ गंगाजल नेने आउ।

(गंगा दौड कऽ जाइत अछि आ गंगाजलक डिब्बा नेने अबैत अछि आ कनैत-कनैत कहैत छथि।)

गंगा- हे काली माइ, हमरा कोइखक लाज राखब। हमर लालकेँ ठीक कइर दिअ। हम सहि कऽ सांझ देब।

रामा- पहिले गंगाजल लाउ ने तब कोबला-पाती करैत रहब।
(रामा अपन पत्नीकेँ हाथसँ झटैक कऽ गंगाजलक डिब्बा छीन लैत अछि आ शंकरक उपर गंगाजल छीट हुनकर मुँह वएह जलसँ धोइ दैत अछि।)

रामा- बउआ उठऽ, केना लगै छऽ आब।

शंकर- बाबूजी, हमर माथा दर्दसँ फाटल जाइत अछि आ जाड़ सेहो होइत अछि।

रामा- अच्छा लै ई कम्बल ओढ़ि कऽ सुइत रहऽ, कनिकबे कालमे सभ ठिक भऽ जेतऽ। यै सुनै छिऐ शंकरक माय।

गंगा- कि कहै छिऐ।

रामा- बउआक माथपर पीरी परहक भभूत लगाउ आ अकरा अराम करऽ दियौ।

पटाक्षेप

दोसर दृश्य

(पति-पत्नी अपन कक्षमे बेटाक हालत पर विचार विमर्श करैत।)

गंगा- कि भेल, किए अहाँ काल्हिसँ चुप छिऐ? कि कोनो अभास भऽ रहल अछि? कहू ने, के भइडाही केने छइ। एक बेर अहाँ नाम कहि दिअ, अखने झोटा पकड़ि पोटा निकालि देबै आ घिसियाबैत पूरा गाम ओंघरेबै। सँइखोउकी बेटखोइकी सभ ककरो नीक देखै लेल नै चाहै छइ।

रामा- (जोरसँ) बन्द करु अपन सत्यनरायलनक कथा। ई ककरो केलहा नै अपने घरक गोसाँइ अछि। आइ तक ककरो एहेन बोखार देखने रहिऐ। अपन देहमे अतेक आगि देविये रखैत अछि। जरूर हमरासँ

कोनो गलती भेल जे हमरा पर मइया तमसा गेलखिन। हमरा हिनका शांत करै लेल गुहार लगबइये पड़त।

गंगा- अहाँ तँ अपने भगत छी। कौल्हका दिन निक अछि, काल्हिये बैसकी बैठाउ। हम जाइ छी, पूजाक सामग्री जुटबै लेल।

(गंगाक प्रस्थान होइत अछि आ रामा गम्भीर सोचमे डुबल रहैत अछि।)

पटाक्षेप

तेसर दृश्य

(एगो दौरामे पूजा सामग्री एकट्ठा करि गंगा आ शंकरक आगमन, हुनके पाछू दू-चाइर लोकनी सेहो अबैत अछि।)

गंगा- बउआ बाबू आबै छऽ, ताबे तूँ पूजा करऽ। ई फूल अक्षत चढा कऽ धूप देखबऽ।

शंकर- (फूल जल चढबैत कहैत छथि) आब की करब?

गंगा- अतऽ कल जोड़इ बैठू।

(रामाक संगे चारि लोग जे ढोल आ झाइल लेन अछि, हुनकर प्रवेश।)

रामा- शंकरक माय सभ तैयारी कऽ लेलौं? गंगाजल संगेमे राखने रहब।

(रामा गोसाँइ निपैत अछि आ फूल अक्षत चढा कऽ माँक प्रार्थना करऽ लगैत अछि। चारू लोकनी डाला बिचमे रखैत माँक गुहार लगबैत अछि आ ढोल झाइल सेहो बजबैत अछि।)

चारू लोकनी- तोहरे दुआरे मइया हम

अर्जी लगैलियइ हेऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ हूंऽऽऽऽऽऽऽ

बोल जय गंगे,

बोल जय गंगे,

बोल जय गंगे।

बोल कि कष्ट छउ, किए बजेलऽ हमरा, बोल, बोल, कि भेलउ?

गंगा- हे मइया, कि गलती भेल हमरासँ आ हमरा घरवालासँ। सभ दिन तँ अहींक पिरी निपैत आँखि खुलैत यऽ हमर, कि अपराध भेल जे हमरा बेटाकेँ अहाँ चारि दिनसँ मतेने छी।

रामा- अहिना भूइज कऽ खेबउ। अपना खाय छऽ छप्पन प्रकार आ हमरा लऽ फूल अक्षत। एक दिशसँ सभकेँ भूइज-भूइज खेबउ।

गंगा- एना किए कहै छऽ, अगर हमरासँ कोनो कुघटी भेल तँ हमरा माफ कइर दिअ, अहाँ जे कहब हम सभ करै लेल राजी छी।

रामा- तँअ ठिक छइ, हमरा जानक बदले जान चाही। हमरा हर अमावश्याक राइतमे इकरंगा खस्सीक बैल देबही तँ तोहर कल्याण भऽ जेतउ। ले ले, लेह अक्षत, बोल बोल जय गंगे, बोल बोल जय गंगे, बोल बोल जय गंगे।

गंगा- अहिना हएत भगवान, हम जानक बदले जान देब।

रामा- होऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ हएऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ बोल जय गंगा, बोल बोल जय गंगे, बोल बोल जय गंगे। आब हम चलै छी।

पटाक्षेप

चौथा दृश्य

(ग्रामीणक बीचमे)

गंगा- हयोउ, जब घरक देवता बैल मांगै छइ तँ अहाँकेँ दइमे कि हिचकिचाहट भऽ रहल अछि। बउआ दिश देखियौ तँ, आइ पाँच दिन भेल, बेदरा एक बेर नै आँखि खोलइ यऽ।

रामा- आब अपन गहबरमे बैल नै पड़ैत अछि, हमर बाबा अपन अंगोरिया आंगुर चिर कऽ बैल सौपने रहथि, ओही कऽ बदले लरू चढबैत रहथि। केना फेरोसँ बैल दी वएह सोचै छी।

गंगा- अहाँकेँ बेटाक चिंता नै अछि? हम बैल देबै, हम वचन देने छी।

एगो ग्रामीण- हो रामा, किए अतेक सोचै छऽ तूँ। अपना मने तँ नइ दै छऽ। माँ मांगलकऽ। जाधरि तूँ बैल नइ देबहक शंकर ठीक नइ हेतऽ। बेटा लऽ दऽ दहक।

गंगा- सुगनी लग एक रंगा खस्सी छइ। लऽ आनू गऽ। हम कहने रहियै तँ कहलकै, लऽ जाउ।

पटाक्षेप

अंतिम दृश्य

(ग्रामीणक भीड़क बीच बेहोस अवस्थामे शंकर।)

गीत- काली मइया हे कनिये, काली मइया हे कनिये.

होइयो न सहायऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ

रघुनाथ- हयोउ, कि बात छिऐ। यौ रामा, कक्काक अइठाम अतेक भीड़ कथी कऽ छिऐ।

एगो ग्रामीण- हुनका बेटा कऽ देहमे काली समैल छइ, कहै छइ कि जानक बदले जान नइ देबही तँ अकरा भूइज कअ खेबउ। अखन वएह बैइल दैत अछि, ओकरे भीड़ छिऐ।

रघुनाथ- कहिया तक ई अंधविश्वास रहत अहि गाममे। चलू चलि कऽ देखै छी।

(रामाक घरमे रघुनाथक आगमन)

रघुनाथ- काकी, कतऽ अछि बउआ, देखू।

गंगा- रघुनाथ बउआ, आइब गेलहक सहरसँ। अए, देखहक ने आइ छऽ सात दिन भऽ गेलैए, आँखि नइ खोलै छइ। जाधरि बैइल नइ देबइ, नइ छोड़थिन मइया।

(रघुनाथ शंकरक नब्ज देखैत आ सिर पर हाथ राखि आँखि देखैत कहैत छथि।)

रघुनाथ- काकी अहाँ सभ अपन मुर्खताक कारण अकरा जानसँ माइर देबइ। अकरा दिमागी बुखार भेल अछि। अगर इलाजमे देर करबै तँ बेटा कतौ नइ मिलत।

रामा- बेसी तूँ इंगलिस नइ बतिया, ई कोनो बुखार नइ देवीक केलहा छिऐ, हमरा अपन काज करऽ दे।

रघुनाथ- हो कक्का, एगो बातक जबाब तूँ सभ ग्रामीण मिल क दए। तोरा दुगो पुत्र छऽ, एगो बिमार छऽ तँ कि तूँ एगो पुत्रक जान लऽ कऽ दोसर पुत्रक जान बचेबहक, नइ ने। तँ फेर माँ काली ई कोना करथिन। हुनका लेल तँ अहि संसारमे रहैबला हर जीव माँक संतान

छी। फेर ओ ई कोना करथिन। अंधविश्वासक चादरमे नइ लिपटल रहऽ। जागऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ आबो तँ जागऽ।

रामा- तूँ आइ हमर आँखि खोइल देलहक। चलऽ बउआकेँ अस्पताल लऽ चली।

''जानक बदले जान देनाइ

अछि ई अंधविश्वासक बाइन

करि परन हमसभ ई कि

नइ लेब आब ककरो प्राण।

इति।

जिन्दगीक मोल

प्रथम-दृश्य

राम रतन- बाबू सुतल छिऐ?

भिक्खन- कि कहै छहक बउआ? जागले छिऐ, बाजऽ, बहुत परेशान लागि रहल छहक।

राम रतन- बाबू, हम बाहर कमाइ लेल जाइ के सोचि रहल छी। तोहर की विचार छऽ।

भिक्खन- नै बउआ, हम अतेक दिन तक तोरा नै कतौ जा देलियऽ। आबो नै जा देबऽ। तोरा सिवा हमरा के छै। तोहर माइ तोरा हमरा कोरामे दऽ कऽ दुनिया छोड़ि देलक। तहियासँ हमर सभ कुछ तूँ छहक। हम तोरासँ एक पल खातिर दूर नै रहि सकै छी।

राम रतन- बाबू आब हम १८ बरसक भऽ गेलिऐ। हम अपन ख्याल राखैमे सक्षम छी। हमरा बाहरक दुनियाँ देखै कऽ एगो मौका दऽ दिअ, बस एक बेर जा दिअ, फेर अहीं संगे रहब।

भिक्खन- नै, अबकी बैशाखमे तोहर बियाह करै कऽ अछि। बियाह करि लऽ, फेर तोरा जतऽ जाय कऽ मन हेतऽ जायहक।

राम रतन- बाबू आब माइनो जाउ। किछु दिनक तँ बात छै। फेर अहाँ जेना कहब हम तहिना करब।

भिक्खन- ठीक छै, अहाँक हठक आगू हमरा झुकइये पड़तै। ककरा संगे आ कतऽ जेबहक?

राम रतन- बाबू, काल्हि फुलचनमा हिमाचल जा रहल छै। हम ओकरे संगे हिमाचल जाएब।

भिक्खन- ठीक छइ, काइले जेबहक तब तँ पाइ कौरीक ओरियान करऽ पड़तै। कखुनका गाड़ीसँ जेबहक।

राम रतन- रातिक ११ बजे निर्मली सँ गाड़ी पकड़बै। आब हम जाइ छी, अपन कपड़ा-लत्ता साफ करै लऽ।

। पटाक्षेप।

दोसर दृश्य

भिक्खन- बउआ हइए..... फूलचन एलऽ।

राम रतन- आबैय छी बाबू। कपड़ा पिनहै छी।

भिक्खन- बउआ फूलचन। तूँ तँ ओतै रहै छहक। तोरा तँ ओतौका सभ किछु कऽ पता हेतऽ।

फूलचन- हउ कक्का, तूँ चिंता नै करऽ। राम रतन हमरे संगे रहतै। ओतऽ ओकरा कोनो चीजक तकलीफ नै हेतै।

भिक्खन- तूँ तँ दवाइबला कम्पनीमे काज करै छहक नऽ! कथीक काज करै छहक?

फूलचन- हँ कक्का। दवाइयेबला कम्पनीमे छिऐ। ओइमे तँ बहुत तरहक काज होइ छै। जे काज भेटल सएह करि लेलौं।

भिक्खन- अच्छा चलऽ, ठीक छै।

राम रतन- चल फूलचन!

भिक्खन- बउआ सभ किछु ठीकसँ लऽ लेलहक नऽ? आ सभ दिन हमरा फोन करैत रहिअ। बाहर जाए छहक, गाड़ी-घोड़ा देख कऽ चलइहक।

राम रतन- ठीक छै बाबू, अहाँ चिंता बिलकुल नै करू। अपन ख्याल रखब। समय-समयपर खाना खाइत रहब आ बेसी काज नै करब। हम जल्दी घुइम-फिर कऽ आबि रहल छी।

सबहक प्रस्थान!

।पटाक्षेप।

तेसर दृश्य

(हिमाचल पहुँच कऽ)

राम रतन- फूलचन, आइ गामसँ एला छऽ दिन भऽ गेलैए। तूँ तँ काम पर चलि जाइ छऽ आ हमरा असगर पहाड़ जकाँ समय लगै यऽ। हमरो कतउ काज लगा दे नऽ।

फूलचन- अच्छा ठीक छै। काल्हि हम अपन मालिकसँ तोरा लऽ बात करबउ।

दोसर दिन

फूलचन- राम रतन, काल्हिसँ तूँहो चलियहन हमरा संगे। ८ हजार मासिक तनखुआ पर हम तोरा लऽ बात केलियौहँ, मंजूर छउ नऽ। मन लगा कऽ काज करबही तँ अओर तनखुआ बढ़ेतउ।

राम रतन- ई तँ हमरा लऽ बहुत खुशीक बात अछि। अखने हम बाबूकेँ ई शुभ समाचार दै छी।

पटाक्षेप।

चारिम दृश्य

कम्पनीक कैनटिंगमे बैठ राम रतन आ फूलचन खाना खाइत गप्प करैत अछि।

राम रतन- फूलचन अतऽ कोन काज होइ छै। हमरा सँ आइ कोनो काज नै करेनकैए। डॉक्टरबला कोट पहिरने एगो आदमी एलै आ हमरा एगो गोली खिया कऽ चलि गेलै। कुछो समझमे नै आबै छै, उ हमरा कथीक दवाइ देलकैए। ओतऽ चारि-पाँच गरऽ अओर छेलै, सभकेँ वएह दवाइ देलकैए।

फूलचन- अतऽ अलग-अलग बिमारीक दवाइ बनै छै, ओकरे जाँच खातिर कम्पनी किछु लोककेँ नौकरी पर रखै छै, जइमे सँ एगो तुहो छी।

राम रतन- ओइ दवाइसँ कोनो हानि तँ नै होइ छै?

फूलचन- नै! अगर हेबे करतै तँ अतऽ डॉक्टरक आ दवाइयक कोनो कमी छै? जे खर्चा ओकर इलाजमे लगतै सभ कम्पनी देतै। हमहूँ तँ कतेक साल तक यएह काज केलिऐ, कहाँ किछु भेलै।

एक आदमी- फूलचन, राम रतनकेँ पठाउ, डॉक्टर साहेब बजेने छै।

फूलचन- जी। (रामरतनसँ) जो देखहीं की कहै छउ।

राम रतन डॉक्टरक चेम्बरमे जाइत अछि।

राम रतन- साहेब अहाँ बजेलौं।

डॉक्टर- ई दवाइ खा लिअ आ एतऽ पड़ि रहू, किछु इन्जेक्सन लगेबाक अछि।

दवाइ खा कऽ राम रतन सुइ लइ लऽ मेज पर लेट जाइए!

२ घंटा बाद

डॉक्टर- राम रतन ओ राम रतन उठू।

डॉक्टर राम रतनकेँ हिलाबैत अछि आ फेर नब्ज देखऽ लागैत अछि!

डॉक्टर- ई की, ई तँ मरि गेल। कियो अछि, डॉक्टर खुरानाकेँ बजाउ।

डॉक्टर खुराना- की भेल?

डॉक्टर- सर, एकरा देखू, की भऽ गेलै, नब्ज नै चलै छै।

डॉक्टर खुराना- ओह नो! ई मरि गेल। कोन दवाई देलौं एकरा?

डॉक्टर-सर ई तीनू।

डॉक्टर खुराना- की अहाँ पागल छी? एक साथ एतेक दवाइ, सेहो पहिले बेरमे। पहिने अहाँ एकरा नींदक गोली खुएलौं, तकर बाद एतेक पावरक दू-दू इन्जेक्सन दऽ देलौं?

डॉक्टर-सर आब की हएत?

डॉक्टर खुराना- हमरा सभ ऐठाम तँ ई रोजक बात अछि। एकर परिवारबलाकेँ मुआवजा दऽ कऽ चुप करा दियौ, आ हँ जखन सभ चलि जाए तखन बॉडी बाहर निकालब। ता तक एकर मरबाक खबर ऐ चहरदिवारीसँ बाहर नै एबाक चाही, बुझि गेलौं।

रातिक ९ बजे

फूलचन- सर, राम रतन कतऽ अछि, ओकर छुट्टी नै भेल?

डॉक्टर- आइ एम सॉरी फूलचन, राम रतन आब ऐ दुनियाँमे नै रहल। हमरा एकर अफसोस अछि। ओकर परिवारबलाकेँ कम्पनी एक लाख रूपैया मुआवजाक तौरपर देत। हम ओकरा नै बचा पेलौं।

फूलचन मने-मन सोचैत अछि

-आब हम की जबाब देब कक्काकेँ। केना कहब कि ओकर जिअइ कऽ सहारा छिन गेल। केना जिथिन ओ, हे भगवान, एना केना भऽ गेल।

पटाक्षेप!

अंतिम-दृश्य

फूलचन- हेल्लो.. कक्का, तूँ जेना छहक तहिना अखने गाड़ी पकड़ि लए। राम रतन बहुत जोर बीमार छऽ।

भिक्खन- बउआ, एक बेर हमरा राम रतन सँ बात करा दए। की भेलैए हमर बाबूकेँ। हम तँ देखनइयो नै छिऐ हिमाचल तँ केना एबऽ।

फूलचन- कक्का, हमर छोटका भाइ तोरा लऽ कऽ एतऽ। ओ अखने तोरा घर आबि रहल छऽ, तूँ बस जल्दी आबि जा।

भिक्खन- हम अबै छिअ बउआ, तूँ हमरा बउआक ख्याल रखियहक।

फूलचन- ठीक छै, आब फोन रखै छिअ।

कहैत-कहैत फूलचन कानऽ लगैत अछि

दोसर दिन हिमाचल पहुँच कऽ

भिक्खन-बउआ........बउआ राम रतन कतऽ छहक?

फूलचन- कक्का पहिले अहाँ किछो खा लिअ। राम रतन ठीक यऽ।

भिक्खन- पहिले हम अपना बेटाकेँ देखब तब किछो मुँहमे लेब।

फूलचन भिक्खनक गला पकड़ि कानऽ लगैए आ सभ किछु बता दइए।

भिक्खन- फूलचन, हमरा बेटाक जीवनक सौदा तूँ ८ हजार मे केलहक। तूँ सभ किछु जानै छेलहक, तइयो ओइ मौतक मुँहमे हमरा बेटाकेँ धकेल देलहक। तूँ हमर सभ किछु लऽ लेलहक, हमरा निष्प्राण बना देलहक। हमर बेटाक मौतपर हमरा १ लाखक भीख तोहर कम्पनी देतऽ, उ ओकरे मुँह पर फेक दिहक। हमरा नै चाही कोनो भीख। आइ हमर बेटा मरल, काल्हि ककरो अओरक बेटा मरत। आखिर ई मौतक खेल किए खेलल जाइए? जे दवाइक परीक्षण जानवरक ऊपर करबाक चाही ओकरा भोला-भाला गरीब मनुष्यक ऊपर करैत अछि। कि अकरा रोकै लेल कोनो कानून नै अछि?

एक घार रूदनक संगे पटाक्षेप